Date of Posting 13-14 every month
Rs. 25/- per copy

DL No. DL (E)-20/5275/2020-2022
RNI No. DELHIN/2008/24416

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

❑ खंड : 13 ❑ वर्ष : 13 ❑ अंक : 8 ❑ अगस्त, 2020 ❑ मूल्यः 25.00 ❑ दिल्ली

पशु के ब्यांत के बाद के 100 दिन का महत्व

आयुर्वेट पशुजगत रेडियो कार्यक्रम

बकरी पालन : छोटे किसानों के लिए स्वावलंबन का एक जरिया

पशु पोषण में खनिज तत्व का महत्व एवं इसकी कमी से होने वाले रोग

AYURVET™

PMKVY
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

ARF
AYURVET RESEARCH FOUNDATION

कौशल भारत

कृषि और पशुपालन-ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कुंजी

हमारे प्रमुख कौशल क्षेत्र

- दुग्ध उत्पादन
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- जैविक खाद्य उत्पादन
- बायोगैस संचालन
- जैविक खेती
- औषधीय पौधों की खेती
- हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी
- मत्स्य पालन

प्रशिक्षण पाएं, आमदनी बढ़ाएं

कृषि एवं पशुपालन को यदि कुशलता एवं ज्ञान के साथ किया जाए, तो यह आपके उत्पादन को दुगुना कर सकता है।

तो आईए, साथ मिलकर कुशल भारत का निर्माण करें, जो हमारे ग्रामीण रोजगार को संपन्नता से भर दें।

Contact Us

प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए सम्पर्क करें:-

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन

AYURVET™

कॉरपोरेट ऑफिस: 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टॉवर, प्लॉट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010(उ.प्र.),दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स: 7100202

रजिस्टर्ड ऑफिस: 4 तल, सागर प्लाजा, डिस्ट्रिक सेंटर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-92

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

खंड : 13 | अंक : 8 | अगस्त, 2020 | दिल्ली

प्रकाशक व प्रधान सम्पादक :
मोहन जे. सक्सेना

सम्पादक:
डॉ. अनूप कालरा

संपादकमंडल:

आनन्द मेहरोत्रा एवं डॉ. दीपक भाटिया

संपादकीय सदस्य:

अमित बहल, डॉ. ए.बी. शर्मा, डॉ. भास्कर गांगुली, डॉ. दीप्ति राय एवं डॉ. आशीष मुद्गल

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक : 275/- रुपए

सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट **''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली''** के नाम से दिए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चैक में बैंक कमीशन के 30/- रुपए अतिरिक्त जोड़ दें।

पत्रिका से संबंधित सभी विवादित मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

पत्रिका में प्रकाशित लेख/विचार लेखकों के निजी हैं। प्रकाशक/संपादक इस हेतु उत्तरदायी नहीं हैं।

आयुर्वेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री मोहन जे. सक्सेना द्वारा छठा तल, सागर प्लाजा, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित व मै. श्री राम इंटरप्राईजेज, एम-71, जैन मंदिर गली, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

संपादकीय/व्यवस्थापीय कार्यालय: आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स : 91-120-7100202.

Web: www.ayurvet.com, e-mail: info@ayurvet.com

कहाँ क्या है

पशुधन

- पशु के ब्यांत के बाद के 100 दिन का महत्व 5
- गाय-भैंस के नवजात बच्चों की देखभाल करते समय इन बातों का रखें ध्यान 7
- केंचुआ खाद बिजनेस से एक लाख महीना से ज्यादा कमाई 9
- पशुपालकों के लिए दूध की चक्की मशीन 10
- पशुओं में स्ट्रिंगहाल्ट की समस्या व उपचार 12
- दूध-वरदान या अभिशाप 15
- पशु पोषण में खनिज तत्व का महत्व एवं इसकी कमी से होने वाले रोग 19
- भूमि आंवला 23
- पशुओं में टीकाकरण 25
- बकरी या बकरी पालन से किसान बढ़ा सकते हैं अपनी इनकम, सरकार दे रही है सब्सिडी 31
- इनसे सीखिए मछली पालन का तरीका पालते हैं देसी किस्म की मछलियां 35
- लॉकडाउन में मछली पालकों को हुआ फायदा किसान से जानिए कैसे हुई कमाई 36
- लॉकडाउन से बर्बाद हुए पोल्ट्री किसान मुर्गियों के दाने के लिए भी लेना पड़ रहा है कर्ज 37
- डेरी और पोल्ट्री से कमाई करनी है तो इन 3 बातों का ध्यान रखें... 38
- बकरी पालन : छोटे किसानों के लिए स्वावलम्बन का एक जरिया 42
- कभी साइकिल से दूध बेचने वाले राजेंद्र आज साल में करते हैं 15 करोड़ के दूध का व्यापार 42

अन्य

- आप पूछे, विशेषज्ञ बताएं 34
- खोज खबर 29
- महत्वपूर्ण दिवस 40

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

किसान की आमदनी बढ़ाने के लिए पशुपालन, पशुस्वास्थ्य और गुणवत्तायुक्त उत्पादन करने की बात प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी रखते रहे हैं। हमारा संस्थान भी पिछले दो दशकों से इस दिशा में कार्य कर रहा है। अभी तक किसान केवल दूध से आय पर ध्यान दे रहा था। अब छत्तीसगढ़ सरकार ने गोधन न्याय योजना लाकर पशुपालकों की अतिरिक्त आय का जरिया प्रस्तुत किया है। इसमें किसानों से दो रुपए प्रतिकिलो गोबर खरीदा जा रहा है। इससे पशुपालकों को लाभ हो रहा है।

पशुपालन में दूसरी महत्वपूर्ण बात है पशु प्रजनन। पशु नस्ल एवं प्रजनन क्षमता अच्छी होगी, तो पशु जल्दी गाभिन होगा। भारत सरकार ने इस क्षेत्र में अनेक योजनाएं संचालित कर रखी हैं। इसी क्रम में राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश के सभी जिलों में राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान योजना का दूसरा चरण चलाया जा रहा है। इसके तहत पशुपालकों को उनके घर-द्वार पर ही निःशुल्क कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा दी जाएगी, ताकि उच्च गुणवत्ता तथा उत्तम नस्ल की संतति प्राप्त करके दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी दर्ज की जा सके।

कोरोना काल में दूध की खपत घटने से किसानों को दूध के बाजिव दाम नहीं मिल पा रहे हैं। अतिरिक्त दूध का मिल्ड पाउडर, मक्खन और घी बनाने से इनका स्टॉक भी बड़ी मात्रा में इकट्ठा हो गया है। अब चर्चा का विषय बना हुआ है कि दूध की न्यूनतम दरें निर्धारित की जाएं।

कोरोना काल में इम्युनिटी बढ़ाने के लिए औषधीयों पर खास ध्यान दिया जा रहा है। इसीलिए अनेक कंपनियां लगातार ऐसे उत्पाद बाजार में उतार रही हैं। इसी कड़ी में अमूल ने हल्दी आइसक्रीम, हल्दी दूध, जिंजर मिल्क और तुलसी दूध बाजार में लॉन्च किये हैं।

नवीन अंक आपके हाथों में है। इस अंक में हमने महत्वपूर्ण विषयों पर आलेख दिए हैं। हमें पूरा विश्वास है कि पहले अंकों की तरह ही यह अंक भी आपके लिए उपयोगी साबित होगा। आप अपने सुझाव, प्रतिक्रियाएं एवं प्रस्ताव हम तक अवश्य पहुंचाएं, ताकि उसे भी आगामी अंक में स्थान दिया जा सके।

(डॉ. अनूप कालरा)

पशु के ब्यांत के बाद के 100 दिन का महत्व

ब्यांत के बाद के 100 दिन दुग्ध उत्पादन के लिए बेहद महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि इन्हीं 100 दिनों में डेरी व्यवसाय से होने वाले लाभ का निर्धारण होता है। इन 100 दिनों में पशु प्रबंधन एवं देखभाल उचित तरीके से होना चाहिए, ताकि पशु स्वस्थ रहे, दूध उत्पादन निरंतर बना रहे एवं पशु अगले प्रजनन चक्र में समय से प्रवेश कर सके।

ब्यांत के बाद के 100 दिन पशुपालकों के लिए बेहद महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि इन्हीं 100 दिनों में डेरी व्यवसाय से होने वाले लाभ का निर्धारण होता है। इन 100 दिनों में पशु प्रबंधन एवं देखभाल उचित तरीके से होना चाहिए, ताकि पशु स्वस्थ रहे, दूध उत्पादन निरंतर बना रहे एवं पशु अगले प्रजनन चक्र में समय से प्रवेश कर सके। पशुपालक कुछ छोटी, किंतु महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखकर अपने डेरी व्यवसाय को सफल बना सकते हैं एवं उचित मुनाफा भी अर्जित कर सकते हैं। चलिए आपको बताते हैं कि ब्यांत के बाद इन जरूरी बातों का ध्यान रखकर आप डेरी व्यवसाय को लाभकारी बना सकते हैं।

दूध उत्पादकता

पशु के दूध उत्पादन की क्षमता पहले 5-8 हफ्तों में शिखर

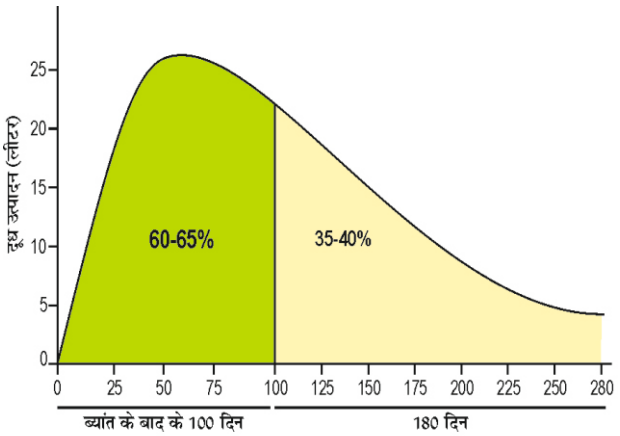

पर पहुंचती है एवं फिर हर महीने 7 प्रतिशत की औसत से गिरती है। साथ ही दुधारू चक्र का लगभग 60-65 प्रतिशत दूध उत्पादन इन्हीं 100 दिनों में होता है। इसी कारण से यह जरूरी है कि पशु से बेहतर उत्पादन लेने के लिए उसे संतुलित आहार दिया जाए एवं साथ ही कैल्शियम की कमी से बचाने के लिए तरल कैल्शियम पिलाया जाए।

बीमारियों के प्रति पशु की अधिक संवेदनशीलता

ब्यांत के उपरांत पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है। यह अधिकतर प्रसव के तनाव की वजह से होता है। इसी कारण से पशु की बीमारियों के प्रति ग्राहकता एवं संवेदनशीलता बढ़ जाती है। पशु कई उपापचयी एवं संक्रामक रोगों का शिकार हो सकता है। इस वजह से पशु का उचित प्रबंधन आवश्यक होता है, ताकि पशु के इलाज में होने वाले अनावश्यक खर्च से बचा जा सके।

ब्यांत के बाद होने वाली आम समस्याएं तथा उससे होने वाली हानियां

समस्या	हानियां
जेर का फंसना	1. गर्भाशय में संक्रमण। 2. दूध उत्पादन कम होना। 3. पशु का देर से गर्मी में आना।
तनाव	1. भूख कम होना। 2. दूध का घटना। 3. संक्रामक बीमारियों के प्रति संवदेनशीलता बढ़ना। 4. कमजोरी
दुग्ध ज्वर	1. दूध उत्पादन में गिरावट। 2. पशु का उठ न पाना। 3. गंभीर परिस्थिति में पशु की मृत्यु।
भूख कम होना	1. दूध उत्पादन कम होना
नकारात्मक ऊर्जा संतुलन/दूध में कम वसा	1. पशु में कमजोरी 2. पशु का वजन गिरना। 3. भूख न लगना। 4. दूध में भारी गिरावट। 5. दूध में कम वसा।
जिगर की कमजोरी	1. कमजोर पाचन शक्ति। 2. दूध उत्पादन में कमी। 3. शिथिलता।
थनैला	1. दूध की मात्रा एवं गुणवत्ता का कम होना। 2. थनों का स्थायी खराब होना।
मूक उत्तेजना (साइलेंट हीट) समय पर गर्मी में न आना	1. समय पर गर्भधारण न होना। 2. ब्यांत का अतंराल बढ़ना। 3. गर्भधारण में देरी 4. ब्यांत के अंतराल का बढ़ना।

अगले प्रजनन चक्र की तैयारी

पशु को आमतौर पर ब्यांत के लगभग 60 दिनों के अंदर ही गर्मी में आ जाना चाहिए, जिससे वह दोबारा अगले प्रजनन चक्र में प्रवेश कर सकें। इसलिए ब्यांत पश्चात् के दिनों में पशु को खनिज एवं सूक्ष्म खनिज तत्वों की कमी को पूरा करने के लिए खनिज मिश्रण देना चाहिए। इसे देने से पशु समय पर गर्मी में आएगा एवं गर्मी के स्पष्ट लक्षण दिखाएगा। साथ ही पशु आसानी से गर्भ भी धारण कर पाएगा। पशु के गर्मी में आने के 12-18 घंटे के बाद गर्भाधान करवा लेना चाहिए। भैंसों में चूकि गर्मी के लक्षण बहुत कमजोर दिखाई देते हैं इसीलिए पशुपालकों को अधिक सजग रहने की आवश्यकता है। इन्हीं कारणों से यह आवश्यक है कि पशु को संतुलित आहार देने के साथ-साथ उनका बेहतर प्रबंधन भी किया जाए। तभी पशुओं का स्वास्थ्य एवं उत्पादन सुचारू रहेगा एवं साल दर साल उनसे पशुपालक अधिक मुनाफा पा सकेंगे। □□

-आयुर्वेट डेस्क

आयुमिन वी5

विटामिन एंव खनिज तत्वों का संपूर्ण मिश्रण

AYURVET

- पशु को स्वस्थ रखने में व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में सहायक।
- पशु की कार्यक्षमता बढ़ाने में सहायता करे।
- पशु की प्रजनन क्षमता को बढ़ाने में सहायता करे।

पैक

- 1 कि.ग्रा. पैक, 5 कि.ग्रा. पैक

गाय-भैंस के नवजात बच्चों की देखभाल करते समय इन बातों का रखें ध्यान

-डॉ. आनंद सिंह

ग्रामीण क्षेत्र में ज्यादातर नवजात बछड़े/बछिया जन्म लेने के कुछ ही महीनों के अंदर मर जाते हैं, जिससे पशुपालक को नुकसान होता है। इसलिए अच्छी देखभाल करके हम एक अच्छी गाय और भैंस बना सकते हैं।

नवजात बछड़े पैदा होते ही गाय/भैंस अपने बच्चे को चाटती हैं और उनके शरीर पर चिपकी हुई झिल्ली व द्रव्य पदार्थ आदि साफ करती हैं, यदि वह ऐसा नहीं करती है, तो आप बछड़े के शरीर पर थोड़ा सा नमक छिड़क देंगे, तो अवश्य ही उसे चाट कर साफ कर देगी। यदि इसके बाद भी नहीं करती है, तो आप रूई की सहायता से भी उसके नाक, आंख व कान में लगी गंदगी को साफ कर सकते हैं। मुख्य रूप से नवजात बछड़े के साथ इन बातों का ध्यान रखना चाहिए-

- नवजात बछड़े को पैदा होते ही उसकी नाभि को नाभि सूत्र से 5 से 6 इंच की दूरी पर नये ब्लैड से काट के अलग कर देना चाहिए और कटे हुए भाग में ऊपर से 5 से 6 सेंटीमीटर की दूरी पर कपड़े की पट्टी से बांध देना चाहिए तथा टींचर आयोडीन सलूशन उसके नाभि पर लगाना चाहिए।
- नवजात बछड़े को साफ-सुथरी तथा हवादार जगह पर रखना चाहिए। जहां पर उचित मात्रा में रोशनी आ रही हो वह स्थान नम, गंदा और सीलन भरा नहीं होना चाहिए।
- बछड़े को ठंडी हवा या गर्म हवा से या खराब मौसम से बचाना चाहिए। बछड़े को रखने वाली जगह पर मोटी पुआल बिछा देनी चाहिए।
- वजन के अनुसार बछड़ों को खींस पर्याप्त मात्रा में पिलाना चाहिए। नवजात बछड़े को पैदा होने के दो-तीन घंटे के अंदर खींस पिलाना लाभदायक होता है, दूध की मात्रा बच्चे की वजन का 1/10 भाग होना चाहिए।
- बछड़ों को पैदा होने की 18-20 दिन बाद थोड़ा-थोड़ा हरा चारा देना चाहिए, ताकि उनको खाने की आदत हो जाये।
- बछड़ों को 15 दिन से लेकर 45 दिन के अंदर उनका सींग रोधन करवा देना चाहिए।

7. बछड़ों को अंतः परजीवी व बाह्य परजीवी से बचाव करना चाहिए। अंतः परजीवी हेतु बछड़ों को पहले हफ्ते, 15 दिन, 1 महीने, 3 महीने और 6 महीने पर कृमि नाशक दवा दे।

नवजात पशुओं की देखभाल व आहार

नवजात बच्चे भविष्य के पशुधन होते हैं, अगर शुरुआत से ही उन पर ध्यान दिया जाए, तो आगे चल कर उन से अच्छा उत्पादन ले सकते हैं। पैदा होने के बाद उचित देख रेख न होने से 3 महीने की उम्र होने तक 30-32 फीसदी बच्चों की मौत हो जाती है। बच्चे के जन्म लेने के आधे से एक घंटे के अंदर मां का पहला दूध (खीस) जरूर पिलाना चाहिए, जिससे उसके शरीर में किसी भी संक्रमण से लड़ने के लिए प्रतिरोधक क्षमता पैदा हो जाए। खीस को जरूरत से ज्यादा नहीं पिलाना चाहिए, वरना दस्त होने का खतरा पैदा हो जाता है। दूध 4-4 घंटे के अंतर से 3 बार पिलाना चाहिए। 15-20 दिन के बाद बच्चों को सूखी घास, जितनी वे आराम से खा सकें, खिलानी चाहिए। इससे उनके पेट का विकास तेजी से होगा। दाने की मात्रा हर हफ्ते 50 से 100 ग्राम तक बढ़ा कर देनी चाहिए।

अगर पशुपालक दूध का कारोबार कर रहे हों, तो 3 महीने के बाद भरपेट चारा-दाना देते रहें और वीटाधन एच नियमित रूप से दें। बच्चे को डायरिया होने पर पशु चिकित्सक को दिखाएं, वरना बच्चों की इससे बहुत जल्दी मौत हो जाती है। डायरिया की स्थिति में जब तक डॉक्टर को नहीं दिखा सकें, तब तक बछड़े को डायरोक अगले 3-4 दिन तक नियमित रूप से दें, यह काफी प्रभावकारी होगा। डॉक्टर की सलाह से कृमिनाशक दवा बच्चे को पिलानी चाहिए। □□

अगर पशु ने खाया विषाक्त चारा, सताएंगे उसे दस्त, बदहज़मी और अफारा।

AYURVET™

आयुर्वेट के उत्पाद, पाचन समस्याओं से दिलाएं निदान

डायरोक
ड्राई सस्पेंशन

दस्त की शीघ्र एवं प्रभावी रोकथाम के लिए

विशेषताएं

- दस्त की शीघ्र रोकथाम करे
- पतले गोबर को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 30 ग्राम, पांच गुना पानी में अच्छी तरह मिलाकर पशुओं को दिन में दो बार पिलाएं
- गंभीर स्थिति में हर 6 घंटे के बाद पिलाएं

पैक

30 ग्राम

1 किलोग्राम

पचोप्लस
बोलस

अपाचन व अरुचि में प्रभावशाली

विशेषताएं

- पाचन क्रिया को सुदृढ़/सुचारू करे
- बुखार व संक्रामक रोगों के कारण कम हुई भूख को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों की संख्या बढ़ाने तथा उनके विकास के लिए रुमैन पी.एच. को नियंत्रित करे

सेवनविधि

- दो बोलस दिन में दो बार, 2-3 दिनों तक अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें।

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप

अफानिल
इमलशन

अफारा की परेशानी से राहत के लिए

विशेषताएं

- पशु के पेट (रुमैन) में बने अफारा एवं झाग को कम करे
- पशु के पेट (रुमैन) में रुकी गैस को जल्द बाहर निकाले
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 50 मि.ली. दिन में दो बार, 2 दिनों तक पिलाये अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें

पैक

100 मि.ली.

केंचुआ खाद
बिजनेस से एक लाख महीना से ज्यादा कमाई

आजकल जैविक और अजैविक पदार्थो के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है और वातावरण प्रदूषित होकर, मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अब हम रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर, जैविक खादों एवं दवाईयों का उपयोग कर, अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं, जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुद्ध रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ रहेंगे। खेती के इन तरीको से कोशिश है कि मिट्टी की उर्वरता का निर्माण और रख रखाव बना रहे इसके लिए फसलें उगाना, फसलों का परिक्रमण, जैविक खाद और कीटनाशक और न्यूनतम जुताई आदि तरीके हैं मिट्टी में मूल जैविक तत्व प्राकृतिक पौधों के पौष्टिक तत्वों से बना है, जोकि हरी खाद, पशु का खाद, कम्पोस्ट और पौधो के अवशेष से बना है।

जैविक खाद के महत्व को समझते हुए अनेक लोग वर्मी कम्पोस्ट व्यवसाय में उतरे। आज हम इन्हें में से एक मेरठ में रहने वालीं 27 वर्षीय पायल अग्रवाल की सफलता गाथा का जिक्र करेंगे। पायल ने बीटेक की पढ़ाई की है, साथ ही सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहीं हैं। वह बैंक पीओ, क्लर्क आदि की परीक्षा दे चुकी हैं, लेकिन खास सफलता नहीं मिल पाई। पायल पढ़ाई के साथ-साथ सोशल मीडिया पर छोटे-मोटे बिजनेस के आइडिया भी खोजती रहती हैं। इस दौरान उन्हें वर्मी-कम्पोस्ट यानी केंचुआ खाद बनाने का आइडिया आया। आज उन्हें करीब 2 साल हो गए केंचुआ की खाद बनाते हुए, इससे वह हर महीने में 1 लाख रुपए से ज्यादा का मुनाफा कमा रही हैं।

जैविक खेती से होने वाले लाभ

- भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि
- सिचाई अंतराल में वृद्धि
- लागत में कमी आती है
- फसलों की उत्पादकता में वृद्धि
- भूमि की गुणवत्ता में सुधार
- भूमि की जल धारण क्षमता वृद्धि
- भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम

केंचुआ खाद बनाने की शुरुआत

पायल ने 22 साल की उम्र में खाद बनाने की शुरुआत की. यह खाद किचन वेस्ट से तैयार होती थी। यानी किचन में जो सब्जी के छिलके, फलों के छिलके निकलते थे, वह उन्हें एक कंटेनर में डालती थी।

इस तरह करीब 15 दिनों तक कचरा एकत्र होता रहता था, वह उसमें पानी डालकर सड़ने देती थीं, साथ ही उसमें गोबर मिला देती थीं। इस तरह 1 महीने में खाद तैयार हो जाती थी।

ऐसे किया बिजनेस शुरू

इसके बिजनेस के लिए जमीन की जरूरत थी, लेकिन पायल के पास खुद की जमीन नहीं थी। इसके बाद पायल ने करीब डेढ़ एकड़ जमीन किराए पर ली थी। इसका सालाना किराया करीब 40 हजार रुपए था। उन्होंने पानी के लिए बोरिंग करवाई, बिजली के लिए पुराना जनरेटर लगवाया, फावड़ा-तगाड़ी जैसे छोटे-छोटे औजार खरीदे। इसके बाद काली पॉलीथिन के 2 रोल मंगवाए। इससे 12 बेड बन जाते हैं। यानी 2 से 24 बेड बन गए। इनके जो टुकड़े बचे थे, उससे 2 बेड और बन गए। इस तरह करीब 26 बेड बन गए। इसके बाद पायल ने गोबर और केंचुए डाल दिए और इसके ऊपर पराली बिछा दी। इस पर रोजाना 1 बार पानी छिड़का, ताकि नमी बरकरार रहे और हवा भी लगती रहे।

अब 500 बेड लगाकर बनाती हैं खाद

इस वक्त पायल हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, अलीगढ़, बरेली, महाराष्ट्र, आगरा, कश्मीर, जामनगर जैसे शहरों में वर्मी कम्पोस्ट की यूनिट लगवा चुकी हैं। वह इसका कोई चार्ज नहीं लेती हैं, बल्कि सिर्फ केंचुआ खाद की सप्लाई करती हैं। इस वक्त उनके पास स्किल्ड लेबर हैं, अगर कहीं यूनिट लगानी होती है, तो वहां उनका एक लेबर जाता है। □□

पशुपालकों के लिए दूध की चक्की मशीन

आज के दौर में गाय पालन, दूध उत्पादन व्यवसाय या डेरी फार्मिंग छोटे और बड़े, दोनों स्तर पर विस्तार से फैला हुआ है। इस व्यवसाय में कई तरह के उपकरणों का इस्तेमाल होता है। ऐसे में बाजार में तमाम आधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं, जिनके द्वारा पशुपालकों को डेरी फार्मिंग में काफी सहायता मिलती है।

इसी कड़ी में पशुपालकों में दूध की चक्की को लेकर रुचि काफी कम दिखाई दे रही है। इसके लिए हरियाणा के लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की तरफ से सीएम को एक प्रस्ताव भेजा गया है। इस प्रस्ताव में दूध की चक्की पर सब्सिडी देने की मांग की है। इससे पशुपालक दूध से उत्पाद बनाकर बेचने के लिए प्रेरित होंगे। इसके अलावा उनकी आमदनी में भी इजाफा हो पाएगा।

दरअसल लुवास ने दूध से आइसक्रीम, पनीर, फ्लेवर्ड मिल्क जैसे प्रोडक्ट तैयार करने के लिए एक मशीन का निर्माण किया है। इस मशीन का नाम दूध की चक्की रखा गया है। इस मशीन को एक बस में लगाया गया है। इस बस द्वारा महेंद्रगढ़ जिले के गांवों के पशुपालकों को जागरुक किया गया, ताकि वह दूध से बने उत्पाद को बाजार में लेकर आएं।

करनाल पशु मेला में लुवास के स्टॉल पर हरियाणा के सीएम श्री मनोहर लाल खट्टर ने इस मशीन से बनी दूध बर्फी और पनीर को खाया। इसके बाद सीएम श्री मनोहर लाल और कृषि एवं पशु पालन मंत्री श्री जेपी दलाल ने दूध की चक्की की

जानकारी ली। मगर पशुपालकों के सामने समस्या है कि वह दूध की चक्की मशीन में इतनी बड़ी रकम निवेश नहीं कर सकते। अगर सरकार इस मशीन पर सब्सिडी और मार्केटिंग में सहयोग करती है, तो पशुपालकों को काफी मदद मिल जाएगी।

दूध की चक्की मशीन पर सब्सिडी

लुवास ने सुझाव दिया है कि अगर पशुपालकों को दूध की चक्की मशीन पर 50 प्रतिशत सब्सिडी दी जाए, तो वह इस मशीन को बहुत आसानी से खरीद सकते हैं। इससे पशुपालकों को खोवा, घी, पनीर, कुल्फी, क्रीम और दूध का केक टेस्टिंग जैसी सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

इतना आता है खर्च

दूध की चक्की मशीन को स्थापित करने में लगभग पांच लाख रुपये का खर्च आता है। इस खर्च को पशुपालक आसानी से वहन नहीं कर सकता है, इसलिए लुवास ने सरकार से दूध की चक्की मशीन पर सब्सिडी देने का प्रस्ताव रखा है। अगर इस प्रस्ताव को मंजूरी मिल जाए, तो पशुपालकों को अपने दूध के प्रोडक्ट के लिए मार्केटिंग सपोर्ट मिल जाएगा। इससे पशुपालकों की आमदनी दोगुनी हो सकती है।

□□

AYURVET™

GES™ ALTERNATIVE GREEN ENERGY SOLUTIONS

ARF AYURVET RESEARCH FOUNDATION

किसान भाइयों के लिए खुशखबरी

धान की नर्सरी

गन्ने की नर्सरी

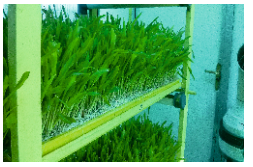

हरा चारा

अब खरीदें और पाएं सब्सिडी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: 7985318152

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स
तकनीक एक, लाभ अनेक

पौधे को उगाने के लिए सामान्यतः बीज को मिट्टी में डाला जाता है, जबकि हाइड्रोपोनिक्स तकनीक में पौधे को बिना मिट्टी के उगाया जाता है। मिट्टी पौधों के लिए पोषक पदार्थों के संवाहक का काम करती है, लेकिन मिट्टी पौधे की वृद्धि के लिए स्वयं जरूरी नहीं होती। यदि पौधों को जरूरी तत्व पानी में घोलकर दें, तो पौधों की जड़ें उन्हें प्रयोग करने में सक्षम होती हैं एवं पौधों की वृद्धि सामान्य रहती है।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के लाभ

- इस तकनीक में जमीन एवं पानी की बहुत कम जरूरत पड़ती है।
- इस विधि में वातावरणीय प्रदूषण भी घट जाता है, क्योंकि पोषक तत्वों का उपयोग पूरी तरह होता है।
- पौधों में कीड़े और बीमारियां लगने की संभावना कम-से-कम होती है, क्योंकि इस विधि में पौधों का विकास नियंत्रित वातावरण में होता है।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक आने वाले समय की जरूरत बनने वाली है क्योंकि बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ फसलों का बढ़ता उत्पादन हमारी प्राथमिकता है।
- आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक को आयुर्वेट के वैज्ञानिकों द्वारा निरंतर आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है और उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिल रहे हैं।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के उपयोग

- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से धान की नर्सरी तैयार करना।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से साग-सब्जी के पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से औषधीय व मसाले वाले पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से हरे चारे का उत्पादन।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से व्हीट ग्रास का उत्पादन।

पशुओं में स्ट्रिंगहाल्ट की समस्या एवं उपचार

-डॉ. ज्योत्सना शक्करपुडे, डॉ. दीपिका डी. सीजर, डॉ. आदित्य मिश्रा, डॉ. आनंद जैन, डॉ. शशि प्रधान, डॉ. सुमन संत एवं डॉ. कविता रावत

पटेलार लक्सेशन/फिक्सेशन को आमतौर पर स्ट्रिंगहाल्ट के रूप में जाना जाता है। घरेलू पशुओं की लगभग हर प्रजाति में यह समस्या बताई गई है-गोजातीय, घोड़े, ऊँट, भेड़, बकरी, कुत्ता और बिल्ली में हो सकती है। भैंस और गाय में स्ट्रिंगहाल्ट काफी आम है, लेकिन यह जानलेवा नहीं है। फिर भी, स्ट्रिंगहाल्ट पशु के उत्पादन प्रदर्शन को कम करता है और पशु के बाजार मूल्य को कम करता है। स्ट्रिंगहाल्ट के उपचार के दौरान दैनिक ड्रेसिंग, एंटीबायोटिक इंजेक्शन और पशुचिकित्सा में काफी व्यय होता है। यह समस्या भारत के तुलना में अन्य देशों के पशुओं में कम पायी जाती है, और प्रायः डेरी पशुओं में गर्भावस्था के आखिर में ज्यादा होती है। कम उम्र के दुर्बल पशु इस समस्या से ज्यादा पीड़ित होते हैं। पशुओ में यह समस्या बरसात और जाड़े की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु में ज्यादा पाई जाती है।

इस समस्या का प्रमुख लक्षण पिछले पैर में लंगड़ापन है, और लंगड़ापन की अवधि और गंभीरता बढ़ती जाती है जब तक की पशु का पैर कठोर नहीं हो जाता है और पशु अपना घुटना मोड़ नहीं पाता है। स्ट्रिंगहाल्ट एक असामान्य चाल है, जो हिंडलिंब के अतिरंजित ऊपर की ओर झुकाव की विशेषता है, जो पैदल चलने पर हर मोड़ पर होती है। यह समस्या प्रायः

पशुओं के एक पैर में होती है, लेकिन दोनों पैरों में हो सकती है। इस समस्या में पशु अपने पैर के पृष्ठीय तल को जमीन से घसीटते हुए एवं झटका लेते हुए चलता है, इसलिए इस स्थिति को रेगनी या झनका कहते है। कुछ लोग पहले इस समस्या को मवेशियों और ऊँटो में 'स्ट्रिंगहाल्ट' भी कहते थे।

स्ट्रिंगहाल्ट के प्रमुख कारण

- पोषण की कमी।
- स्ट्रिंगहाल्ट ज्यादातर अंतर्निहित न्यूरोपैथी के कारण होते हैं।
- पशुओं की शोषण गतिविधि।
- बाहरी चोट या घाव।
- नस्ल और आनुवांशिक गड़बड़ी।
- जलवायु संबंधी परिवर्तन।
- जांध की हड्डी की घिरनी या चर्खी में रूपात्मक बदलाव।

स्ट्रिंगहाल्ट की पहचान

- इस समस्या का मुख्य लक्षण पशु के पिछले पैर में लंगड़ाहट।
- पैर के पृष्ठ तल को जमीन से घसीटते हुए चलता है और कभी कभी खुर लगातार जमीन से रगड़ने के कारण पशु का खुर जख्मी हो जाता है और खुर से रक्तस्राव होने लगता है।
- चलते समय पिछले पैर से झटके लेना।
- पशु अपने घुटने को मोड़ नहीं पाता है।
- जांध की हड्डी की घिरनी या चर्खी (पटेला) का स्थिर हो जाना।
- मध्य पटेला का तंतु बंधन कठोर हो जाता है।
- पहचान क्लिनिकल संकेतों पर आधारित है, लेकिन इलेक्ट्रोमोग्राफी द्वारा इसकी पुष्टि की जा सकती है।
- एक्स-रे, सोनोग्राफी द्वारा।
- इसके अलावा पशुचिकित्सक, पशु के घुटने की संधि में निश्चेतक डाल के भी समस्या की पहचान कर लेता है।

स्ट्रिंगहाल्ट का उपचार

इस समस्या का कोई औषधीय उपचार नहीं है, शल्य चिकित्सा

ही इसका एकमात्र उपचार है। इसकी शल्य चिकित्सा को मीडियल पटेलार डेस्मोटॉमी (एम् पी डी) कहते है। इसके शल्य चिकित्सा में तंतु बंधन को काट दिया जाता है, जिससे पशु की घुटने की चर्खी (पटेला) अपना कार्य स्वतंत्र रूप से करने लगता है और पशु में लंगड़ाहट तुरंत ठीक हो जाती है। यह शल्य चिकित्सा पशु के खड़े होने की स्थिति एवं लेटाकर दोनों तरह से

किया जा सकता है। सामान्यतः इस शल्य चिकित्सा से पशुओं में कोई परेशानी नहीं होती है, परन्तु कभी कभी घुटने के जोड़ में अस्थिरता और गठिया जैसी समस्या हो सकती है। यद्यपि यह समस्या प्रायः एक ही पिछले पैर में होती है। फिर भी कुछ पशु चिकित्सकों का मानना है कि तंतु बंधन (लिगामेंट) काटने की शल्य क्रिया दूसरे वाले पैर में भी करना चाहिए, जिससे कि भविष्य में यह समस्या दूसरे पैर में ना हो। कुछ पशुचिकित्सक मीडियल पटेलार लिगामेंट में और इसके चारों तरफ 'काउंटरइरिटेंट' का इंजेक्शन लगा देते है, जिससे तंतुबंधन का आकार और विस्तार ठीक हो जाता है और पशुओं में लंगड़ापन की समस्या ठीक हो जाती है।

परक्यूटेनस स्प्लिटिंग एक आधुनिक शल्य चिकित्सा की विधि है, जिसमे अल्ट्रासाउंड की सहायता से एक वीपी ब्लेड द्वारा तंतु बंधन को काटा जाता है। इसलिए इस विधि को टेंडन स्प्लिटिंग भी कहा जाता है। अध्ययन से पता चला है कि इस विधि द्वारा रेगनी को ठीक करने में ज्यादा अच्छे परिणाम सामने आये है, किन्तु यह विधि अपेक्षाकृत महँगी है और शल्य क्रिया में समय भी ज्यादा लगता है। अतः पशुपालकों को चाहिए कि यदि उनके पशु में उपरोक्त कोई लक्षण दिखाई दे रहा है, तो वे अपने पशु को निकट के पशु चिकित्सालय या पशुचिकित्सक को दिखाये।

स्ट्रिंगहाल्ट का उन्मूलन दीर्घकालिक प्रक्रिया है। प्रजनन के लिए उपयोग होने वाले जानवरों, विशेष रूप से बैल में, चलने के दौरान स्ट्रिंगहाल्ट की सावधानीपूर्वक जांच की जानी चाहिए। इस कारण से बैल का सावधानीपूर्वक चयन महत्वपूर्ण है। □□

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर

AYURVET™

पशुपालकों की लगातार मांग पर फिर से शुरू हुआ आयुर्वेट पशु जगत रेडियो कार्यक्रम

आपकी लगातार आती हुई मांग को देखते हुए आपका चेहता आयुर्वेट पशुजगत कार्यक्रम इस माह से फिर से आरंभ हो गया है।

इस कार्यक्रम को अब आप पूरे भारतवर्ष में कहीं भी रेडियो के साथ-साथ अब अपने मोबाइल पर भी सुन सकते हैं, जिसका विवरण निम्न प्रकार है:-

चैनल: **इंद्रप्रस्थ चैनल (819 मैगाहर्ट्ज)**
एफएम गोल्ड (100.1 मैगाहर्ट्ज)
दिन: **प्रति सोमवार**
समय: **सायं 5.20**

पशुजगत कार्यक्रम में किसानों को पशुपालन की उपयोगी जानकारी दी जाती है। इस कार्यक्रम में किसानों द्वारा पशुपालन संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैं, जिनके उत्तर विशेषज्ञों द्वारा दिए जाते हैं। कार्यक्रम संबंधी जानकारी, सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं आप अपन हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं:-

आयुर्वेट लिमिटेड,
पोस्ट बॉक्स नं. 9292,
दिल्ली-110092

एक्सापार

AYURVET™

प्रसव पश्चात् गर्भाशय की सफाई एवं पुनः गाभिन बनाने हेतु

ब्याने के बाद की समस्याओं का अत्यंत प्रभावकारी उपाय

- गर्भाशय के संक्रमण से बचाए एवं संपूर्ण सफाई करे
- गर्भाशय के संकुचन द्वारा जेर गिराने में सहायक
- गर्भाशय को समयानुसार पुनः स्थापित करे

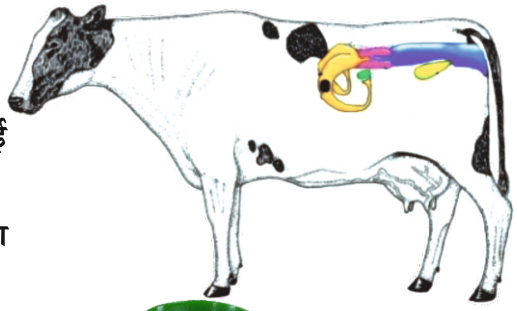

- रीपिट ब्रीडिंग एवं बांझपन की समस्या से बचाए
- ब्याने के बाद समयानुसार अगले गर्भधारण के लिए तैयार करे

1 लीटर बोतल

500 मि.ली. पैट बोतल

4 बोलस की एक स्ट्रिप

दूध-वरदान या अभिशाप

-डॉ मुकेश शर्मा

आज के समय में डेरी फार्मों पर यदि दुग्ध उत्पादन वैज्ञानिक पद्धति से किया जाये, तो दूध वास्तव में वरदान है, परन्तु यदि दुग्ध उत्पादन में पशु आहार एवं स्वास्थ्य का ध्यान न रखा जाये, तो ये एक अभिशाप साबित हो सकता है। पशुओं को नियमित टीकाकरण उनके रहने के लिए साफ एवं स्वच्छ स्थान, समय समय पर पशुओं की जाँच कराना एवं उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाना नितांत आवश्यक है।

गोषु प्रियम् अमृतं रक्षमाणा (ऋग 1/71/6) इसका अर्थ है गो दुग्ध अमृत है यह हमारी रोग से रक्षा करता है इसी प्रकार ऋग्वेद के मन्त्र 5/19/14 में भी कहा है कि गो दूध सर्वाधिक प्रिय एवं वांछनीय पेय पदार्थ है। अन्य अनेक स्थानों पर दूध को एक स्वास्थ्यवर्धक, रोगनाशक, रोगों से बचाव करने वाला, ओज व शक्ति देने वाला पेय कहा गया है। केवल शारीरिक शक्ति नहीं अपितु इसे बुद्धि वर्धक व समृद्धि देने वाला भी कहा गया है।

आयुर्वेद के ग्रन्थ ''निघंटु'' में भी दूध के अमृत एवं पीयूष नाम दिए है। इस प्रकार इन सभी शास्त्रीय प्रमाणों से ज्ञात होता है कि संसार में यदि कोई अमृत है, तो वह दूध ही है। आज के परिवेश में ये जानना जरुरी है कि जो दूध हम पी रहे है वो वास्तव में अमरतत्त्व गुणों से भरपूर है?

दूध प्रोटीन, विटामिन, ऊर्जा, खनिज लवणों की प्रचुरता के कारण यह एक स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थ है, जो हमारे शरीर के लिये एक वरदान है, पर इस अव्ययों के साथ यह हमारे लिए बीमारियों का खजाना भी हो सकता है। दूध में उपस्थित हानिकारक जीवाणु लंबे समय से मनुष्यों में रोग कारक बने हुये हैं। टी.बी, ब्रूसेल्ला, डिफथीरिया, स्कारलेट बुखार, क्यू बुखार, अंतड़ियों का इन्फेक्शन आदि बीमारियां, दूषित दूध के द्वारा मनुष्यों में रोग फैलाती हैं। वर्तमान में बढ़ती तकनीकी से इन बीमारियों के फैलाव को निश्चित तौर पर कम किया जा सकता है, परन्तु उसके लिए मनुष्यों में जानकारी का होना आवश्यक है।

आज के समय में डेरी फार्मो पर यदि दुग्ध उत्पादन वैज्ञानिक पद्धति से किया जाये, तो दूध वास्तव में वरदान है, परन्तु यदि दुग्ध उत्पादन में पशु आहार एवं स्वास्थ्य का ध्यान न रखा जाये, तो ये एक अभिशाप साबित हो सकता है। पशुओं को नियमित टीकाकरण उनके रहने के लिए साफ एवं स्वच्छ स्थान, समय समय पर पशुओं कि जाँच कराना एवं उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाना नितांत आवश्यक है।

अमृत रूपी दूध के उत्पादन में पशु आहार का विशेष महत्व है, क्योंकि जैसा आहार दुधारू पशु खायेगा दूध के गुण भी उसी के अनुरूप होंगे। पशु आहार में सही मात्रा में मिनरल, विटामिन एवं टोक्सिन बाइंडर आदि पदार्थों का समावेश करना दूध के गुणों को बढ़ाने के लिए आवश्यक है, क्योंकि कुछ विषैले तत्व जिन्हें वैज्ञानिक भाषा में टोक्सिन कहा जाता है, पशु आहार के माध्यम से पशुओं के दूध में एवं उसके बाद मनुष्य में अपने दुष्प्रभाव छोड़ता है।

आज पूरे विश्व मे स्वच्छ दूध उत्पादन पर जोर दिया जा रहा है, जबकि हमारे देश मे आज भी पारंपरिक डेरी से प्राप्त पूर्णतः अस्वच्छ दूध का उपयोग बड़ी आसानी से किया जाता है। आज आवश्यकता इस बात के प्रचार प्रसार की है कि दूध जैसा सर्वोत्तम आहार भी आज हमारे लिये जहर साबित हो रहा है, यदि हम चाहते है कि यह सर्वोत्तम बना रहे तो हमें स्वच्छ दूध उत्पादन पर अपना ध्यान केन्द्रित करना होगा तथा उपभोक्ताओं को भी अपनी सेहत का ख्याल रखते हुये पाश्च्युराइज दूध का उपयोग करने पर जोर देना होगा।

दूध उत्पादन से लेकर वितरण तक कई चरणों में दूध हमारे पास पहुँचता है और हर चरण मे दूध की स्वच्छता तथा गुणवत्ता पर असर पड़ता है।

दूध उत्पादन हेतु पशुओं के बांधने का स्थान यदि गंदगी से भरा है, तो स्वाभाविक रूप से यहां से बीमारियां पशुओं के माध्यम से दूध में भी आ सकती है।

पशु आहार जिसके माध्यम से ही पशु दूध उत्पादित करता है, यदि वही ठीक नहीं होगा या हानिकारक रासायनिक तत्वों से संक्रमित होगा, तो वह हानिकारक तत्व दूध के माध्यम से हमारे शरीर को नुकसान पहुँचा सकते है।

यदि अस्वस्थ पशु से दूध निकाला जायेगा, तो भी पशु की बीमारी एवं उसे दी गई दवा का अंश दूध के माध्यम से हमारे शरीर को क्षति पहुँचा सकता है।

दूध निकालने की प्रक्रिया में यदि दूध निकालने वाले को किसी तरह की बीमारी है, तो वह बीमारी हमारे तक पहुँच सकती है, इसलिये वैज्ञानिक तकनीक से अच्छे डेरी फार्मो में मशीन से दूध निकाला जाता है तथा दूध की जांच भी की जाती है।

यदि अन्य किसी माध्यम से कोई जीवाणु या कीटाणु दूध में हो तो उसे पाश्च्युरीकरण के द्वारा नष्ट किया जा सकता है, परन्तु यदि कच्चा दूध का इस्तेमाल किया जाये, तो दूध बीमारियों की जड़ ही साबित होगा।

दूध उत्पादन से वितरण तक के प्रत्येक चरण में दूध के संक्रमण से बचाने का तथा हमारे सर्वोत्तम आहार को सर्वोत्तम बनाये रखने का एकमात्र तरीका यही है, कि दूध वैज्ञानिक पद्धति से परिपूर्ण डेरी फार्म का पाश्च्युरीकृत तथा पैक किया हुआ हो। इन बीमारियों से यदि बचना चाहते हैं, तो ध्यान रखें कि दूध पाश्च्युरीकृत ही हो क्यूँकि पाश्च्युरीकरण ही एकमात्र विधि है, जिससे लगभग सभी जीवाणुओं को नष्ट किया जा सकता है, साथ ही यह भी ख्याल रखें कि जिस डेरी का दूध आप उपयोग कर रहें हैं वह आधुनिक हो तथा पशु स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए सभी संसाधन मौजूद हो सिर्फ नाम व अच्छी पैकिग पर ही न जायें यह भी ख्याल रखे कि एक जगह की अपेक्षा विभिन्न जगहों में इकट्ठा किया गया दूध कितना अच्छा हो सकता है, क्योंकि यह तो निश्चित है कि एक ही जगह पर पशुओं के स्वास्थ्य का ध्यान रखा जा सकता है व स्वच्छ दूध का उत्पादन किया जा सकता है न कि विभिन्न जगहों पर अतः ध्यान रखें कि दूध स्वास्थ्य पशु का हो तथा स्वच्छ तकनीक से निकाला गया हो साथ ही कम से कम समय में आपके पास पहुंचा हो तथा ऐसी डेरी का हो जहां पशु स्वास्थ्य, पशु आहार, स्वच्छ दूध उत्पादन का ध्यान रखा जाता है। साथ ही साथ इन सबके लिए विशेषज्ञ मौजूद हो अन्यथा निश्चित ही आप अपने व अपने परिवार को बीमारियों का तोहफा देंगें।

यदि हम इन बातों पर गौर करेंगे तो निश्चित तौर पर हमारा आहार सर्वोत्तम रहेगा तथा आदि से अनन्त तक हमारे स्वास्थ्य के लिये एक वरदान साबित होगा। इस लेख के माध्यम से यह निश्चित करने की जिम्मेदारी उपभोक्ताओं की है कि उनके तथा परिवार के द्वारा उपयोग किया जाने वाला सफेद अमृत वरदान है या अभिशाप। □□

डेरी गुरु, डेरी कंसलटेंट, राजनांदगाव, छत्तीसगढ़,
सम्पर्क 9165254444

सदस्य बनें

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

एक अच्छी आदत पड़ जाए
जो ज्ञान का दीप जलाएं

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.).
दूरभाष: 91-120-7100201

कृपया स्पष्ट लिखें/टाइप करें:

☐ स्वयं के लिए ☐ मित्र को भेंट ☐ संस्थागत

नाम:.....संस्थान.....

पता:☐ कार्यालय ☐ घर.....

.....

पिन.....

दूरभाष:☐ कार्यालय ☐ घर.....

मैं राशि.....नकद/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/चैक क्रमांक.....(दिल्ली से बाहर के लिए 15 रुपए अतिरिक्त जोड़कर दें) दिनांक..... ''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली'' के नाम प्रेषित कर रहा हूं। कृपया पत्रिका प्रेषित करें।

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता शुल्क : 275/- रुपए

कीटोसिस एवं नेगेटिव एनर्जी बैलेंस से छुटकारा पाएं

AYURVET™

कीटोरोक अपनाएं

कीटोरोक के फायदे

- लीवर की बेहतर सुरक्षा कर कीटोसिस से बचाव और इलाज में लाभदायक
- शरीर में सामान्य ग्लूकोज़ एवं ऊर्जा स्तर को बनाएं रखे
- दूध उत्पादन बढ़ाएं और अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करने में मदद करे

कीटोरोक

कीटोसिस की रोकथाम एवं उपचार के लिए

उपचार के लिए:

200 मि.ली. प्रतिदिन दो बार *2* दिनों तक, अगले *2* दिन *100* मि.ली. दिन में एक बार

पशु पोषण में खनिज तत्व का महत्व एवं इसकी कमी से होने वाले रोग

-डॉ. अशोक कुमार पाटिल एवं डॉ रवीन्द्र कुमार जैन

सन्तुलित आहार सभी प्रकार के पौष्टिक तत्व जैसे शर्करा, प्रोटीन, वसा, खनिज तत्व और विटामिन्स का उचित मात्रा में मिश्रित अनुपात होता है। सन्तुलित आहार खिलाने से पशु स्वस्थ रहते है। साथ ही, उनका दूध, ऊन, मांस भी बढ़ता है। पशु आहार में यदि खनिज तत्व की कमी होगी, तो आहार के अन्य पदार्थ शर्करा, प्रोटीन, वसा आदि का सही तरह से प्रयोग नहीं हो सकेगा। पशु कमजोर हो जाता हैं। अनेक प्रकार की बीमारी हो सकती है। अगर, यही तत्व आवश्यकता से अधिक मात्रा में होते हैं, तो भी यह स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक हैं। इससे भी पशु में बीमारी अथवा मृत्यु तक हो सकती हैं। पशु आहार में खनिज तत्व के अभाव और अधिकता से बीमारी भी हो जाती है।

प्राकृतिक रूप से लगभग 40 प्रकार के खनिज जीव-जन्तुओं के शरीर में पाये जाते है, लेकिन इसमें से कुछ अत्यन्त उपयोगी है। इनकी आवश्यकता पशु के आहार में होती है। शरीर के आवश्यकतानुसार खनिजों को दो भागों में बांटते है। एक जो खनिज लवण पशुओं के लिए अधिक मात्रा में आवश्यक हैं, जिनकी मात्रा को ग्राम में या प्रतिशत में व्यक्त करते हैं। इनको प्रमुख खनिज कहते है, जैसे कैल्शियम, फास्फोरस, पोटैशियम, सोडियम, सल्फर, मैग्निशियम तथा क्लोरीन। दूसरे प्रकार के खनिज लवण वे होते हैं, जो शरीर हेतु बहुत सूक्ष्म मात्रा में आवश्यक होते है, जिसको पी.पी.एम. में व्यक्त करते है, ऐसे खनिजों को सूक्ष्म या विरल खनिज कहते है, जैसे लोहा, जिंक, कोबाल्ट, कापर, आयोडीन, मैगनीज, मोलीब्डेनम, सेलेनियम, निकल, सिलिकान, टिन एवं वेनेडियम।

फीड और अतिरिक्त पोषण हमेशा नमक और खनिज प्रदान नहीं करता है। क्योंकि अलग-अलग पशु की आवश्यकता में भिन्नता होती है। नमक की कमी से भूख, वजन, दूध उत्पादन में कमी, कम वृद्धि प्राकृतिक प्रतिरोध में गिरावट और प्रजनन समस्या को जन्म देती हैं। इन समस्याओं को देखते हुए पशुपालक को पाचक तत्व जैसे कच्ची प्रोटीन, कुल पाचक तत्व और चयापचयी ऊर्जा का भी ज्ञान होना आवश्यक है।

पशु शरीर में खनिज तत्व का महत्व

सन्तुलित आहार सभी प्रकार के पौष्टिक तत्व जैसे शर्करा, प्रोटीन, वसा, खनिज तत्व और विटामिन्स का उचित मात्रा में मिश्रित अनुपात होता है। सन्तुलित आहार खिलाने से पशु स्वस्थ रहते है। साथ ही, उनका दूध, ऊन, मांस भी बढ़ता है। पशु आहार में यदि खनिज तत्व की कमी होगी, तो आहार के अन्य पदार्थ शर्करा, प्रोटीन, वसा आदि का सही तरह से प्रयोग नहीं हो सकेगा। पशु कमजोर हो जाता हैं। अनेक प्रकार की बीमारी हो सकती है। अगर, यही तत्व आवश्यकता से अधिक मात्रा में होते हैं, तो भी यह स्वास्थ्य के लिए बहुत ही

हानिकारक हैं। इससे भी पशु में बीमारी अथवा मृत्यु तक हो सकती हैं। पशु आहार में खनिज तत्व के अभाव और अधिकता से बीमारी भी हो जाती है।

कैल्शियम अल्पता-मिल्क फीवर/दुग्ध ज्वर

यह रोग पशु के शरीर में कैल्शियम तत्व की कमी से उत्पन्न होता है तथा सामान्य रूप से मांसपेशियों की कमजोरी, मानसिक अवसाद एवं दूध उत्पादन की कमी के रूप में परिलक्षित होता है। यह रोग अधिक दूध देने वाले पशुओं में ज्यादा पाया जाता है। जनन के 72 घण्टों के अन्दर या जनन के बिल्कुल पहले यह रोग ज्यादा देखा गया है, परंतु कभी-कभी ब्यांत के 3 से 8 हफ्तों के दौरान भी यह रोग होता है। रोग की प्रारम्भिक अवस्था (उत्तेजना अवस्था) में प्रभावित पशु में उत्तेजना, भूख की कमी, अतिसंवेदनशीलता तथा मांसपेशियों की हलचल, सिर का बार-बार झटकना, जीभ का बाहर निकालना, लंगड़ापन, पिछले पैरों का तनाव तथा दांत किटकिटाना आदि लक्षण पाए जाते हैं।

रोग की दूसरी अवस्था (अर्द्धासन अवस्था या बैठ जाने की अवस्था) में पशु उदासीन दिखाई देता है तथा खड़ा होने में असमर्थता, थूथन का सुख जाना, शारीरिक ताप सामान्य से गिर जाना एवं शरीर का ठण्डा पड़ जाना, प्रभावित पशु द्वारा अपनी गर्दन मोड़ कर अपनी कांख पर रखना इत्यादि लक्षण देखने को मिलते हैं। इस रोग की तीसरी अवस्था (धराशायी अवस्था) में पशु बैठ भी नहीं पाता है एवं जमीन पर लेट जाता है, तथा उपरोक्त लक्षण और अधिक गहरा जाते हैं। पशु की हृदय गति कम तथा दुर्बल हो जाती है, रूमैन (पेट) की गति रूक जाती है। प्रभावित पशु में गुदा की शिथिलता तथा आंख की पुतलियों का फैल जाना भी देखा जा सकता है। इस रोग के उपचार के लिए प्रभावित पशु को रक्त मार्ग से कैल्शियम चिकित्सा देने से तत्काल लाभ मिलता है।

फॉस्फोरस अल्पता: पोस्ट पार्चुरियेन्ट हिमोग्लोबिन्यूरिया

यह एक फास्फोरस तत्व की कमी से होने वाला रोग है जो प्रभावित पशुओं में लाल रक्त कोशिकाओं के नष्ट होने तथा रक्ताल्पता के रूप में परिलक्षित होता है। यह रोग 3 से 6 ब्यांत की अवधि के दौरान तथा अधिक दूध देने वाले पशुओं में ज्यादा पाया जाता है तथा ब्याने के 2 से 4 सप्ताह के बाद यह रोग अधिक देखा गया है। भूख की कमी, कमजोरी, दूध उत्पादन में कमी, पशु के शरीर में रक्त की कमी एवं श्लेश्मिक झिल्लियों का पीलापन, पशु के शरीर में जल की कमी के कारण गोबर का सूखा एवं कठोर होना, पीलिया तथा हृदय की गति बढ़ जाना इस रोग में पाये जाने वाले मुख्य लक्षण है। प्रभावित पशु में रक्त की कमी (एनीमिया) तथा भूख की कमी के कारण कुछ ही दिनों में पशु मर भी सकता है। उपचार के लिए प्रभावित पशु को फॉस्फोरस उपलब्ध कराने के लिए सोडियम एसिड फास्फेट रक्त मार्ग (नस से) तथा त्वचा के नीचे दिया जा सकता हैं, भोजन के साथ हड्डियों का चूरा या डाइकैल्शियम फास्फेट भी लाभकारी होता है। रक्त बढ़ाने के लिए कॉपर, लोहा तथा कोबाल्ट सम्मिश्रित टॉनिक लाभकारी होते हैं। रोग की रोकथाम के लिए ऐसे क्षेत्र जहां की मिट्टी में फास्फोरस की कमी हो में पशुओं को पूरक आहार के रूप में खनिज मिश्रण संतुलित आहार के साथ नियमित रूप से देना चाहिए।

अस्थिमृदुता (ऑस्टियोमलेशिया)

यह एक वयस्क दुधारू पशुओं में पाया जाने वाला कंकाल सम्बधित रोग है, जो कि पशु के शरीर में कैल्शियम, फास्फोरस

एवं विटामिन-डी की कमी से हो सकता है। आहार दोष विशेष रूप से खनिज लवणों से युक्त आहार का पूरित न होना, आहार में गेहूं, चोकर या दाल-चूरी की अधिकता एवं शहरी वातावरण में रखी गई दुधारू गाय एवं भैंस में यह रोग अधिक प्रचलित है। दुधारू पशु में दूध उत्पादन कम हो जाना, प्रजनन क्षमता कम हो जाना, भूख की कमी, पैरों की मांसपेशियों में कठोरता, असन्तुलित चाल, जोड़ो में दर्द, धनुषाकार कमर, पशु को उठने-बैठने में दिक्कत होना एवं चलते समय लंगड़ाने के साथ जोड़ों से आवाज आना इस रोग में पाये जाने वाले मुख्य लक्षण हैं। पिछले पैरों में लंगड़ापन इस रोग में अधिक पाया जाता है, अधिक दुधारू पशुओं में यह स्थिति "मिल्कलैग" के नाम से जानी जाती है। इस रोग के उपचार के लिए पशु आहार को विटामिन-ए, डी तथा सी के साथ-साथ खनिज लवणों जैसे कैल्शियम, फास्फोरस इत्यादि से परिपूरित करें। प्रभावित पशुओं में अस्थि निर्माण में सहायक तत्व इन्जेक्शन के रूप में दिए जाने पर भी फायदा होता है। गर्भावस्था एवं वृद्धिकाल में पशुओं को संतुलित आहार एवं खनिज मिश्रण का उपयोग करने से इस रोग को पनपने से रोका जा सकता है।

रिकेट्स

वृद्धिशील, अल्पायु पशुओं में कैल्शियम एवं फास्फोरस के चयापचय का दोषपूर्ण होना या विटामिन-डी एवं कैल्शियम की कमी इस रोग को जन्म देते हैं। प्रभावित पशु की वृद्धि रूक जाना, पैर कमानाकार (टेढ़ा-मेढ़ा हो जाना), जोड़ों का आकार बढ़ जाना, हड्डियों का आकार छोटा हो जाना, जोड़ों का सख्त हो जाना, लंगड़ाकर चलना, पशु के दांतों में विकार उत्पन्न होना एवं मिट्टी खाने की प्रवृति बढ़ जाना आदि लक्षण देखे जा सकते है। इस रोग के उपचार के लिए विटामिन-ए, डी-3, कैल्शियम बोरोग्लुकोनेट, मैग्नीशियम और फास्फोरस देने से लाभ मिलता है। वृद्धिशील पशुओं में विटामिन-डी, मछली का तेल, हड्डियों का चूरा, डाइकैल्शियम फॉस्फेट, प्रोटीन, कैल्शियम एवं फास्फोरस-युक्त आहार का प्रयोग इस रोग की रोकथाम के लिए लाभकारी सिद्ध होता है।

लोहा

पशु शरीर में लोहा खनिज तत्व की कमी से खून में हिमोग्लोबिन की कमी हो जाती है। इससे एनीमिया नामक रोग हो जाता है। जिससे शरीर में कमजोरी और उदासीनता आ जाती है। पशु थकान महसूस करता है। हदय की धड़कन बढ़

जाती है। नवजात को भूख कम लगती है। बढ़वार कम होती है। साथ ही, संक्रामक रोग से प्रतिरोधक क्षमता भी कम हो जाती है। इस तत्व की कमी छोटी उम्र के पशु में अधिक देखने में आती है। जिन्हे केवल दूध ही अधिक पिलाया जाता है। दूध में इस तत्व की हमेशा कमी रहती हैं। संकर में इस तत्व की कमी से उसके बच्चों में पिगलेट एनीमिया नामक रोग होने का भय रहता है। क्योंकि उनको भी अधिकांशतः दूध ही पिलाया जाता है। यह तत्व लगभग सभी प्रकार के खाद्य पदार्थ में पाया जाता है। फिर भी हरी पत्ती वाले खाद्य पदार्थ, चारा जैसे लूसर्न, बरसीम आदि और मांस आहार इस तत्व के बहुत ही अच्छे स्रोत हैं।

आयोडीन

आयोडीन तत्व का मुख्य भाग 'थायराइड' नामक ग्रन्थि थायरोक्सीन नामक हार्मोन घटक के रूप में उपस्थित होता है। शरीर में थायरोक्सीन हार्मोन का मुख्य कार्य आधार उपापचय दर को बढ़ाना, वृद्धि दर को बढ़ाना तथा ऑक्सीजन उपयोग बढ़ाना है। इस तत्व की कमी से पशु में 'गौइटर' नामक रोग हो जाता है। इसमें थायराइड ग्रन्थि का आकार बढ़ जाता है। थायरोक्सीन कम अथवा बनना बंद हो जाता है। गर्भावस्था के दौरान इस तत्व की कमी से पैदा होने वाले बच्चे के शरीर पर बाल (ऊन) नहीं होते, कमजोर होते है। कभी शिशु मृत ही पैदा होते है।

फ्लोराईड

फ्लोरीन तत्व दांत तथा अस्थि क्षय रोकने में सहायता करता है। यह तत्व साधारणतः खाद्य पदार्थ की अपेक्षा पीने के पानी द्वारा शरीर में प्रवेश करता है। इस तत्व का 1 पी.पी.एम. तक दांत और हड्डी विकास के लिये लाभदायक है, परन्तु, इससे अधिक 2 पी.पी.एम. तक शरीर के लिए हानिकारक हैं। इस

तत्व की अधिकता से हड्डी का क्षय होता है। दांतो में फ्लोरोसिस रोग हो जाता है। दांत में गड्ढे पड़ जाते है, चमक समाप्त हो जाती हैं। पशु आहार ग्रहण के समय दांत टूटने का खतरा रहता हैं, जिसके कारण पशु भोजन आवश्यकता से कम खाता है। इसका दुष्प्रभाव पशु की बढ़वार, दुग्ध उत्पादन और भेड़ में ऊन उत्पादन पर पड़ता है।

खनिज तत्व कमी निवारण के लिये पशुपालक क्या करें ?

इसके लिए पशु पालक को चाहिये कि वे अपने पशु को बाजार में उपलब्ध विभिन्न गुणवत्ता के खनिज तत्व मिश्रण और साधारण नमक नित्य आहार का एक प्रतिशत खिलाये। आजकल विभिन्न गुणवत्ता की खनिज/लवण ईंट भी उपलब्ध है। इसको पशु की ठाण के पास रख दिया जाता है। यह सस्ती भी पड़ती है। इस प्रकार पशु को खनिज तत्व की कमी से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से बचाया जा सकता है। साथ ही, इससे पशु उत्पादन क्षमता भी बढ़ती है। □□

पशु चिकित्सा एवं पशु पालन महाविधालय,
महू (म.प्र.)

चिड़ाना में पशुस्वास्थ्य केंद्र

स्वस्थ पशु और खुशहाल किसान के लक्ष्य को लेकर आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन गांव चिड़ाना (सोनीपत) में अनेक किसान हितकारी गतिविधियां संचालित कर रहा है। इसी श्रृंखला में, चिड़ाना में आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य केंद्र आरंभ किया गया है।

इस केंद्र द्वारा पशुपालकों को अनेक सुविधाएं एवं जानकारियां उपलब्ध करवाई जाएगी। इसमें कुछ प्रमुख हैं-

- पशुओं के लिए उचित मूल्य पर आयुर्वेदिक औषधियां
- कृषि के लिए उत्कृष्ट जैविक खाद
- पशुओं में थनैला रोग की जांच और उपचार की सुविधा
- पशु पोषण एवं संतुलित आहार
- कृत्रिम गर्भाधान सुविधा
- बेहतर प्रजनन क्षमता
- कृमि जांच आदि

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-0120-7100283

□□

भूमि आंवला

-रंजन कुमार राकेश

भूमि आंवला (***Phyllanthus niruri***) लगभग 1.5 फीट से 2 फीट ऊंचा एक वर्षीय पौधा होता है जो बरसात के समय खेतों में खरपतवार के रूप में स्वयंमेव उगता दिखाई देता है। यद्यपि आंवला की तुलना में यह पौधा बहुत छोटा होता है परन्तु आवंला के पौधे जैसे पत्तों तथा पत्तों के पीछे छोटे-छोटे आंवला जैसे फल लगने के कारण संभवतया इसको जमीन का आंवला अथवा 'भूमि आमला' कहा जाता है।

मृदा एवं जलवायु

यह फसल लगभग सभी प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है, लेकिन दोमट मिट्टी जिसका पीएच 5.5 से 8 हो उसे श्रेष्ठ माना गया है। इसे अच्छी जल निकासी वाली चूनेदार मृदा में भी उगाया जा सकता है।

इसके लिए समशीतोष्ण जलवायु अच्छी होती है। यह भारत में 700 मीटर के ऊंचाई तक के क्षेत्रों में पाई जाती है। देश के दक्षिण भाग में इसकी उपलब्धता कम होती है।

खाद एवं उर्वरक

कार्बनिक खाद जैसे गोबर की खाद, वर्मी कम्पोट, हरी खाद का आवश्यकतानुसार उपयोग किया जाता है। प्रतिरोपण के समय नाईट्रोजन (N) की आधी खुराक तथा फास्फोरस (P) और पोटाश (K) की पूरी खुराक का इस्तेमाल किया जाए और शेष आधी नाईट्रोजन खुराक का उपयोग उस समय किया जाए जब पौधे की लम्बाई 40-45 से.मी. तक हो जाए।

कृषि तकनीक

इस पौधे का संरचना एकत्रित बीजों द्वारा किया जाता है। इसमे पौधों को सूखने दिया जाता है और फलों को कागज पर फैलने दिया जाता है।

बीजों को अच्छी तरह तैयार की गयी नर्सरी की क्यारियों में बोया जाता है।

समानरुपी वितरण के लिए बीजों को सूखी रेत या मृदा में मिश्रित किया जाता है, क्योंकि यह बहुत छोटे होते है।

बेहतर अंकुरण तथा हर्ब की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के क्रम में बीजों की बुवाई अप्रैल के अंत से मई के अंत तक की जाती है।

जब तक बीज में अंकुरण आना आरंभ होता है तब तक उचित नमी को कायम रखा जाए।

10-15 से.मी. लम्बी तथा 35-40 दिन पुरानी पौध का प्रतिरोपण 15x10 से.मी. के अंतराल पर किया जाए।

प्रतिरोपण के तुरंत बाद हल्की सिंचाई से पौध का अच्छी तरह जमना सुनिश्चित हो जाता है।

सिंचाई

जिन क्षेत्रों में नियमित बारिश होती है वहां बुवाई के दौरान सिंचाई की जरुरत नहीं होती। जहां कम वर्षा होती है वहां प्रत्येक पखवाड़े में सिंचाई की आवश्यकता होती है।

पौध सुरक्षा

प्रमुख कीट-पट्टी खाने वाली झिल्ली तथा तने का धुल (वीविल)

प्रमुख रोग- चूर्णी फफूंद

नियंत्रण: -

- कीट नाशीजीव का नियंत्रण करने के लिए 0.2% नुवाक्रोन का पौधे पर छिडकाव किया जाए।

चूर्णी फफूंद को सल्फर द्वारा प्रभावशाली ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है, जिसमें फफूंदनाशक जैसे सल्फेक्स

0.25% की दर से शामिल होती है।

कटाई, प्रसंस्करण एवं उपज

प्रतिरोपण के 3 माह बाद जब पौधे हरे और शाकीय हो जाते हैं उस समय फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

चूंकि फसल बढ़ती है अतः उसकी लम्बाई बढ़ती है, किंतु पत्तों की संख्या कम हो जाती है, क्योंकि नीचे के पत्ते गिरते रहते है चूंकि मुख्य सक्रिय तत्व पत्तों में होता है, अतः कटाई का मुख्य लक्षण उचित समय में अधिकतम पत्ती बायोमास का उत्पादन करना होता है।

कटाई के बाद हर्ब को 3-4 दिन छाया में सुखाया जाता है। सूखने के बाद सामग्री को बोरियों में भरकर शुष्क स्थान में भंडारित करके रख दिया जाता है।

प्रति हेक्टेयर सालाना 14-16 क्विंटल सूखी साख प्राप्त होती है।

औषधीय उपयोग

भूमि आंवला का सम्पूर्ण पंचांग (जड़, तना, पत्ती, पुष्प, फल) औषधीय उपयोग का होता है। भारतवर्ष में यह लगभग सभी क्षेत्रों में बहुतायत में खरपतवार के रूप में पाया जाता है।

विश्व के कई हिस्सों में इसे जिगर की खराबी, विशेष रूप से हिपेटाइटिस बी तथा पीलिया के कारण, आंत संक्रमण, मधुमेह आदि के उपचार में जनसाधारण की दवाई के रूप में उपयोग किया जाता है।

दवाई की पारंपरिक प्रणाली में अनेक संयोजन में यह एक महत्वपूर्ण घटक है तथा इसका उपयोग ब्रानकाइटिस, कुष्ठ रोग, दमा तथा हिचकी रोग में उपयोगी है।

जड़ का मिश्रण एक अच्छा शक्तिवर्धक टानिक है।

आयुर्वेट लिमिटेड द्वारा अनेक पशु स्वास्थ्य औषधियों में भूमि आंवला का उपयोग किया जाता है। इसमें से प्रमुख हैं-यकृतफिट, कीटोरोग आदि। □□

चिड़ाना में पौध प्रशिक्षण एवं संग्रह केंद्र

आयुर्वेट का आरंभ से उद्देश्य रहा है-किसान की आय को बढ़ाना। इसी लक्ष्य को लेकर आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन के माध्यम से सोनीपत के गांव चिड़ाना में अनेक किसान हितकारी गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। इसी श्रृंखला में, चिड़ाना में आयुर्वेट पशु पौध प्रशिक्षण एवं संग्रह केंद्र आरंभ किया गया है। इस केंद्र द्वारा पशुपालकों को अनेक सुविधाएं एवं जानकारियां दी जाएगीः-

- औषधीय पौधों की गुणवत्ता जांच
- कृषि विधि एवं प्रशिक्षण
- औषधीय पौधों की खेती
- वृक्षारोपण सामग्री व उत्पाद
- जड़ी बूटियों की मार्केटिंग

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-0120-7100280

पशुओं में टीकाकरण

-अक्षय कुमार, आशा वर्मा एवं दिलीप कुमार यादव

मनुष्यों की भांति पशुओं में भी रोग प्रतिरक्षा हेतु टीकाकरण अत्यंत आवश्यक है। यह न सिर्फ उन्हें सूक्ष्म जीवियों के संक्रमण से बचाता है, बल्कि विभिन्न बीमारियों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करता है । इस प्रकार नियमित टीकाकरण द्वारा पशुपालक न सिर्फ दवाइयों पर होने वाले खर्च को काम कर सकते है बल्कि एक बेहतर उत्पादन भी प्राप्त कर सकते है।

मनुष्यों की भांति पशुओं में भी रोग प्रतिरक्षा हेतु टीकाकरण अत्यंत आवश्यक है। यह न सिर्फ उन्हें सूक्ष्म जीवियों के संक्रमण से बचाता है, बल्कि विभिन्न बीमारियों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करता है। इस प्रकार नियमित टीकाकरण द्वारा पशुपालक न सिर्फ दवाइयों पर होने वाले खर्च को काम कर सकते है, बल्कि एक बेहतर उत्पादन भी प्राप्त कर सकते है। टीकाकरण जीवों के संचरण को कम करता है, और अक्सर बीमार जानवरों के इलाज के लिए भुगतान करने से अधिक किफायती होता है। पालतू जानवरों को संक्रामक बीमारियों जैसे रेबीज, परवोवीरस, डिस्टेंपर और हेपेटाइटिस के लिए टीकाएं मिलती हैं। टीका एक स्वास्थ्य उत्पाद है, जोकि पशुओं के सुरक्षात्मक प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है साथ ही उन्हे विभिन्न रोगकारक जैसे जीवाणु विषाणु, परजीवी, प्रोटोजोआ तथा कवक के संक्रमण से लड़ने के लिए शरीर को तैयार करता है ।

टीकाकरण का सिद्धांत

टीकाकरण कार्यक्रम का उद्देश्य पशुओं के विभिन्न रोगों से बचाव द्वारा पशु तथा जन स्वास्थ्य को बढ़ावा देना है। टीकाकरण के द्वारा पशुओं के शरीर में किसी रोग विशेष के प्रति एक निश्चित मात्रा में प्रतिरोधक क्षमता (एन्टीबाडी) विकसित होती है। जो पशुओं को उस रोग विशेष से बचाती हैं। विभिन्न जाति के पशुओं में विभिन्न प्रकार के टीके तथा टीका कार्यक्रम की जरुरत पड़ती है पुनः टीकाकरण या बूस्टर का उद्देश्य शरीर में उचित मात्रा में प्रतिरोधक क्षमता लगातार बनाये रखना तथा उनके प्रतिकूल प्रभाव को कम करना है प्रत्येक बीमारी का टीका अलग होता है तथा एक बीमारी का टीका केवल उसी बीमारी से प्रतिरक्षा प्रदान करता है। बीमारी फैलने से रोकने के लिए जिस गांव क्षेत्र अथवा समूह में रोग हो उसके चारों तरफ के स्वस्थ पशुओं को टीके लगाकर प्रतिरक्षित क्षेत्र उत्पन्न कर देना चाहिए। कुछ जीवाणुओं एवं विषाणुओं द्वारा उत्पन्न बीमारियों से बचाव के प्रति सीरम भी उपलब्ध है इसमें प्रतिरक्षा या एन्टीबाडी होते हैं, जो कि बीमारी के विषाणु अथवा जीवाणुओं द्वारा उत्पन्न विष के प्रभाव को समाप्त कर देते हैं, जैसे टिटेनस के लिए उपलब्ध प्रति सीरम।

वर्तमान समय में आर्थिक लाभ किसानों का एक प्रमुख लक्ष्य है तथा इसमें पशुओं के स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि प्रतिवर्ष हजारों दुधारू पशु खतरनाक बीमारियों जैसे गलघोंटू, लंगडिया, खुरपका, मुंहपका के संक्रमण के कारण मारे जाते हैं, जिससे पशुपालकों को नुकसान उठाना पड़ता है। एक प्रचलित लोकोक्ति है रोकथाम उपचार से बेहतर है यह बात पशुओं में पूर्णतः सत्य है तथा यह आर्थिक तथा नीतिशास्त्र दोनों में लागू होती है। वास्तव में बहुत से विषाणुजनित रोग लाइलाज है तथा इनका एक ही विकल्प इनकी रोकथाम है, जो टीकाकरण द्वारा संभव है। पशुओं में विभिन्न रोगों से बचाव के लिए टीकाकरण उचित समय पर, उचित मात्रा में, उचित जगह

पर, उचित मार्ग से तथा उचित टीकों के प्रयोग द्वारा ही संभव है। टीकाकरण वह विधि है, जिसमें कमजोर या मृत प्रायः या मृत रोगाणुओं को शरीर में प्रविष्ट कराया जाता है, जिसका उद्देश्य उस विशेष रोगाणुओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता को विकसित करना या बढ़ाना है।

टीकाकरण का महत्व

टीकाकरण के द्वारा विश्व में करोड़ों जानवरों के जीवन में विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाव किया गया है। इस तरह पशुपालकों का यह उत्तरदायित्व तथा कर्तव्य बनता है कि वह अपने पशुओं का उचित टीकाकरण पशु चिकित्सक की सलाह पर शुरुआत में ही करायें तथा प्रतिवर्ष पुनः टीकाकरण करायें। यह देखा गया है कई रोगों के लक्षण पशुओं में नहीं दिखते, लेकिन वातावरण में उनके पाये जाने के कारण टीकाकरण की सलाह दी जाती है। वर्तमान समय में हम जूनोटिक रोगों (वह रोग जो पशुओं से मनुष्यों में तथा मनुष्यों से जानवरों मे फैलते हैं) की गंभीरता को अनदेखी नहीं कर सकते जैसे रैबीज, एन्थ्रेक्स, ब्रूसेलोसिस, गाय का चेचक, क्षय रोग इत्यादि। इसलिए पशुओं में टीकाकरण से संक्रामक तथा खतरनाक जूनोटिक रोगों से बचाव संभव है। टीका शरीर के प्रतिरोधी तंत्र को उत्तेजित करता है, जिसके फलस्वरुप एन्टीबाडी का निर्माण होता है। यह एन्टीबाडी शरीर तथा वातावरण में उपस्थित सूक्ष्म जीवों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है। टीकाकरण किए गये पशुओं में अगर वही रोगाणु पुनः आक्रमण करता है, तो शरीर में उपस्थित उस रोगाणु विशेष के विरुद्ध में बना एन्टी बाडी (प्रतिपिंड) उसे विनाश कर उसे रोग होने से बचाती है। टीके शरीर में एक जटिल तरीके से काम करते हैं। अतः यह सलाह दी जाती है कि केवल स्वस्थ पशुओं को ही टीके लगाये जायें। अस्वस्थ या बीमार पशुओं को टीके नहीं लगाना चाहिए। साथ ही पशुपालकों को टीके के बनने की तिथि व नष्ट होने की तिथि पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

टीककरण व रोग से बचाव की शर्तें

आमतौर पर प्रजनन से पहले कम से कम 15 महीने की उम्र तक इंतजार करना सबसे अच्छा होता है। भले ही शुरुआती परिपक्व नस्लें 7 से 9 महीने की उम्र तक यौवन तक पहुंचती हैं, लेकिन जब तक आप उन्हें प्रजनन नहीं करवा सकते हैं, तब तक इंतजार करना सबसे अच्छा है।

टीकाकरण कार्यक्रम पशुओं को विभिन्न रोगों से बचाव को सुनिश्चित करता है। सफलतापूर्वक टीकाकरण किये गये पशुओं में सुरक्षा में तोड़ आने पर भी बीमारी के लक्षण नहीं दिखते हैं और इस तरह टीकाकरण पशुओं में स्वास्थ्य सुरक्षा का महत्वपूर्ण अवयव है। टीकाकरण किए गये पशुओं को बिना टीका दिये गये पशुओं या बीमार पशुओं से अलग रखते हैं। टीकाकरण करवाने से पूर्व पशुओं को अन्तःपरजीवी नाशक दवा पशु चिकित्सक की सलाह पर देनी चाहिए। टीकाकरण के तुरंत बाद पशुओं को खराब मौसम से बचाव एवं अत्यधिक व्यायाम न करायें। चारे में खनिज मिश्रण का प्रयोग कम से कम 45 दिन तक करें। टीकाकरण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि टीकों का संरक्षण उचित तापमान पर हर स्थिति में होना चाहिए। पशुओं में निम्न रोगों के लिए टीकाकरण कराना आवश्यक है:-

खुरहा रोग

यह पशुओं में पाया जाने वाला प्रमुख रोग है, जोकि विषाणु द्वारा फैलता है। यह एक संक्रामक रोग है। इस रोग में आईल एडजूवेंट टीका दिया जाता है। गौवंशीय तथा भैंसवंशीय पशुओं में प्रथम टीका एक माह तथा दूसरा टीका 6 माह की उम्र पर दिया जाता है तत्पश्चात प्रति वर्ष टीकाकरण कराना चाहिए। टीके की मात्रा 2 मिली प्रति पशु (चमड़ी के नीचे) मार्च-अप्रैल या सितम्बर-अक्टूबर के महीने में लगवाना चाहिए। भेड़ तथा बकरियों में एक मिली मात्रा प्रति पशु (चमड़ी के नीचे) देना चाहिए।

गलघोटू

बरसात के मौसम में पाया जाने वाला यह प्रमुख रोग है, जोकि एक जीवाणु द्वारा जनित रोग है। इससे बचाव हेतु वर्षा ऋतु से पहले एवं शीत ऋतु की शुरुआत में टीकाकरण किया जाना

चाहिए। इस रोग में एडजूवेंट टीका दिया जाता है। गौवंशीय तथा भैंसवंशीय पशुओं में प्रथम टीका 6 माह की उम्र और इसके बाद प्रति वर्ष दिया जाता है। टीके की मात्रा 2 मिली प्रति पशु (चमड़ी के नीचे) मानसून के आगमन के पूर्व देना चाहिए। भेड़ तथा बकरियों में एक मिली प्रति पशु (चमड़ी के नीचे) देना चाहिए।

लगड़ी

इस रोग में पॉलीवेलेन्ट टीका दिया जाता है। गौवंशीय तथा भैंसवंशीय पशुओं में प्रथम टीका 6 माह की उम्र और इसके बाद प्रति वर्ष दिया जाता है। टीके की मात्रा 5 मिली प्रति पशु (चमड़ी के नीचे) मानसून के आगमन के पूर्व देना चाहिए ।

ब्रूसीलोसिस

पशुओं में गर्भाधान के तीसरे चरण में गर्भपात होने का यह प्रमुख कारण है। मादा बछड़ों में इस रोग का केवल प्रथम टीका 4-6 महीने की उम्र में 2 मिली देना चाहिए। गाभिन पशु में यह टीका न दें।

एन्थ्रेक्स

इस रोग में स्पोर टीका दिया जाता है पशुओं में प्रतिवर्ष चारागाह जाने के एक महीने पूर्व इस टीके की 1 मिली मात्रा देना चाहिए।

पीपीआर

यह रोग भेड़ तथा बकरियों का बहुत ही खतरनाक रोग है प्रथम टीका 4 महीने की उम्र में तथा पुनः टीकाकरण 3 वर्ष की उम्र में करना चाहिए। इसकी मात्रा 1 मिली चमड़ी के नीचे दी जाती है। यह टीका मानसून के पूर्व लगाना चाहिए ।

थाईलेरियोसिस

गौवंशीय तथा भैंसवंशीय पशुओं में इसका प्रथम टीका तीन महीने या इसके ऊपर की उम्र में लगाते हैं तत्पश्चात् स्थानीय या एनडेमिक जगह पर पुनः टीकाकरण में 3 मिली मात्रा चमड़ी के नीचे के मार्ग से देना चाहिए। इसकी प्रतिरोधक शक्ति 3 महीने तक रहती है । □□

डॉ. ब्रह्मानन्द एव डॉ. नेहा गुप्ता
अपोलो कॉलेज आफ वेटेरिनरी मेडिसिन, जयपुर
एवं डॉ. राजेश कुमार, स्नातकोतर पशु चिकित्सा शिक्षा
एवं अनुसंधान संस्थान, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर

यकृफिट
लीवर टॉनिक द्रव

विषाक्त आहार हो या लंबी बीमारी
पशु के लीवर पर है बोझ भारी।
लीवर की सूजन या हो कृमियों से आहत
यकृफिट दे पशु को हर हाल में राहत।।

यकृफिट के उपयोग
» यकृत (लीवर) की क्रिया को सुचारू रखे
» लीवर से पित्त विसर्जन उत्तेजित कर लीवर की कार्यक्षमता को बढ़ाए
» लीवर की कोशिकाओं को पुनः जीवन देकर उन्हें स्वस्थ रखे
» उत्पादकता बढ़ाए

सेवनविधि
» 50 मि.ली. या दो बोलस, दिन में 2 बार 5-7 दिनों तक या पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप | 500 मि.ली. | 1 लीटर

ब्यांत के बाद दूध उत्पादन में कमी
कारण अनेक, समाधान एक

AYURVET™

पशुचिकित्सकों द्वारा
अपनाया गया वैज्ञानिक
रूप से जांचा परखा
भरोसेमंद हर्बल उपाय

रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

पशुओं की बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए शक्तिशाली समाधान

आयुर्वेट पशु स्वास्थ्य संसार

खोज खबर

दूध और खाद्य तेलों की गुणवत्ता जांच FSSAI की प्राथमिकता में सबसे ऊपर : अरूण सिंघल, सीईओ

खाद्य वस्तुओं की गुणवत्ता आज सबसे बड़ी चुनौती है। देश में खाद्य वस्तुओं की क्वालिटी को बनाए रखने की जिम्मेदारी FSSAI यानी फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया की है। वरिष्ठ आईएएस अधिकारी और FSSAI के नए सीईओ श्री अरुण सिंघल में कहा कि केंद्र सरकार की प्राथामिकताओं में दूध, खाद्य तेल, शहद, मांस और पोल्ट्री प्रॉडक्ट्स की गुणवत्ता बढ़ाना शामिल है। उन्होंने बताया कि FSSAI जल्द ही आयातित खाद्य उत्पादों के लिए नए नियम लाने जा रहा है। पहले से पैक किए हुए खाने या किसी अन्य कंटेनर में जमे हुए खाद्य पदार्थों पर अधिक ध्यान दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि FSSAI ऑनलाइन पंजीकरण और लाइसेंस के लिए अपने FOSCOS प्लेटफॉर्म को आसान बनाने के लिए भी काम कर रहा है। इसके साथ ही एफएसएसएआई खाद्य उत्पादों के लिए आयात मंजूरी को मजबूत करने की प्रक्रिया में भी जुटा है।

राष्ट्रीय गोकुल मिशनः दूसरे चरण में गांव-गांव जाकर किया जाएगा गाय-भैंस का कृत्रिम गर्भाधान

श्वेत क्रान्ति को प्रभावी रूप से लागू करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश के सभी जिलों में राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान योजना का दूसरा चरण 1 अगस्त, 2020 से 31 मई, 2021 तक चलाया जाएगा। इस परियोजना के तहत पशुपालकों को उनके घर-द्वार पर ही निःशुल्क कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा प्रदान की जाएगी, ताकि उच्च गुणवत्ता तथा उत्तम नस्ल की संतति प्राप्त करके दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी दर्ज की जा सके। इससे पशुओं में होने वाले रोगों

को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी और वे कम बीमार पड़ेंगे। राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान योजना के अंतर्गत प्रत्येक जिले के सभी पशुपालकों को प्रजनन योग्य गाय अथवा भैंस को उत्तम नस्ल के वीर्य तृणों की मदद से निःशुल्क गर्भाधान की सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी। कृत्रिम गर्भाधान से पूर्व सभी दुधारू पशुओं को 12 अंकों के पशु आधार नंबर वाले यूआईडी टैग से चिन्हित करने के बाद आईएनएपीएच में पंजीकृत किया जाएगा। इस योजना में किए गए कृत्रिम गर्भाधान, गर्भ जांच एवं संतति के ब्यौरे की ऑनलाइन अपलोडिंग होगी। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कृत्रिम गर्भाधान करने वाले तकनीशियन को 50 रुपए प्रति कृत्रिम गर्भाधान तथा 100 रुपए प्रति उत्पन्न संतति मानदेय प्रदान किया जाएगा। इस योजना का क्रियान्वयन तथा संचालन सीधे तौर पर संबंधित जिलाधीश की देख-रेख में किया जाएगा। पशुपालकों की सुविधा हेतु कृत्रिम गर्भाधान करने वाले तकनीशियनों के नाम तथा फोन नंबर सार्वजनिक किए जाएंगे। पशुपालकों की जानकारी हेतु अलग-अलग माध्यमों द्वारा प्रचार एवं प्रसार करने की व्यवस्था भी की गई है।

अब शामलजी भाई पटेल के हाथों में GCMMF यानि AMUL की कमान, बने नए चेयरमैन

गुजरात के साबरकांठा के कॉपरेटिव लीडर शामलजी भाई पटेल को गुजरात दुग्ध सहकारी विपणन संघ (GCMMF) का निर्विरोध रूप से अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। 52 हजार करोड़ के टर्नओवर के अमूल ब्रांड की मार्केटिंग करने वाले जीसीएमएमएफ की कमान अब साबर डेरी के प्रमुख शामलजी भाई पटेल के हाथों में होगी। श्री पटेल साबरकांठा जिला

सहकारी दुग्ध उत्पादन यूनियन लिमिटेड (साबर डेरी) के अध्यक्ष हैं, जो जीसीएमएमएफ के 18 यूनियन में से एक है। शामलजी पटेल अब तक अध्यक्ष रहे राम सिंह परमार का स्थान लेंगे।

डेयरी सेक्टर में चमकेगा उत्तराखंड का नाम, डेरी विकास विभाग ने KPMG के साथ किया समझौता

उत्तराखंड में दुग्ध उत्पादन क्षमता को बढ़ाने एवं दुग्ध उत्पादों के विपणन को मजबूती प्रदान करने के लिए विभाग ने सहकारिता एवं डेरी विकास के क्षेत्र में वर्षों से काम कर रही केपीएमजी कंपनी को कंसलटेंट के तौर नियुक्त किया। विभागीय मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने कहा कि प्रथम चरण में यह कंपनी जिला दुग्ध संघ नैनीताल व जिला दुग्ध संघ टिहरी के साथ काम करेगी। कंपनी डेरी सेक्टर में बेहतरीन प्रदर्शन कर सूबे में दुग्ध उत्पादन की क्षमता को बढ़ाएगी, साथ ही दुग्ध उत्पादों के विपणन को भी मजबूती प्रदान करेगी। अपनी विशेषज्ञता एवं अनुभव के आधार पर कंपनी प्रदेश में जिला दुग्ध संघों के साथ मिलकर दुग्ध के क्रय से लेकर दुग्ध उत्पादों के प्रोसेसिंग, मार्केटिंग और डिस्ट्रीब्यूसन की चेन पर काम कर इसे मजबूत करेगी।

छत्तीसगढ़: सीएम ने किया गोधन न्याय योजना का आगाज, 2 रूपये किलो गोबर खरीदेगी सरकार

छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल ने महापर्व हरेली के अवसर पर गोधन न्याय योजना की शुरुआत की। इस योजना के तहत राज्य सरकार पशुपालकों से गोबर खरीद कर उससे जैविक खाद तैयार करेगी। बघेल सरकार पशुपालकों से 2 रुपए किलो की दर से गोबर की खरीदारी करेगी। यह योजना संकट के समय किसानों और पशुपालकों के लिए वरदान साबित होगी। इससे पशुपालकों की आय में वृद्धि तो होगी ही, पशुधन की खुली चराई पर भी रोक लगेगी। जैविक खाद के उपयोग को बढ़ावा मिलने से रासायनिक खाद के उपयोग में कमी आएगी। खरीफ और रबी फसल की सुरक्षा सुनिश्चित होने से द्विफसलीय खेती क्षेत्र में होगी। भूमि की उर्वरता में सुधार होगा तथा विष रहित खाद्य पदार्थों की उपलब्धता बढ़ेगी, इससे पोषण का स्तर और सुधरेगा। इसका उद्देश्य पशुपालन को बढ़ावा देने के साथ-साथ कृषि लागत में कमी और भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी करना है। गोठानों को पशुओं के डे केयर सेंटर के रूप में विकसित किया गया है। महिला स्व सहायता समूह द्वारा यहां वर्मी कंपोस्ट के निर्माण के साथ अन्य आय मूलक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। किसानों और पशुपालकों से गोठान समितियों द्वारा दो रुपए प्रति किलो की दर से गोबर की खरीदी की जाएगी, जिससे महिला स्व सहायता समूहों द्वारा वर्मी कंपोस्ट तैयार किया जाएगा। तैयार वर्मी कंपोस्ट को 8 रुपए प्रति किलो की दर से सरकार द्वारा खरीदा जाएगा।

इस राज्य में 25 प्रतिशत सब्सिडी पर 5400 लाभार्थियों को क्रय कराई जा रही हैं 20 हजार गायें

उत्तराखंड में डेरी के जरिए ग्रामीणों की आर्थिक स्थित सुधारने की जोरदार पहल की जा रही है। राज्य के मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत दूधली डोईवाला से समेकित सहकारी विकास परियोजना व गंगा गाय महिला डेरी योजना के अंतर्गत दुधारू पशु क्रय कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। योजना में 5400 लाभार्थियों को 20 हजार दुधारू पशु राज्य के बाहर से क्रय कराए जाने का लक्ष्य है। योजना के प्रथम वर्ष में 2800 लाभार्थियों को 10 हजार दुधारू पशु उपलब्ध कराए जाएंगे। लाभार्थियों को 25 प्रतिशत सब्सिडी दी जा रही है। स्वरोजगार से ही आत्मनिर्भर भारत की राह प्रशस्त हो सकता है। इसमें प्रवासियों के साथ ही युवाओं और महिलाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं।

□□

आयुर्वेट डेस्क

बकरी या बकरी पालन से किसान बढ़ा सकते हैं अपनी इनकम, सरकार दे रही है सब्सिडी

केंद्र सरकार का फोकस किसानों की आय बढ़ाने और उनकी लाइफ स्टाइल इम्प्रूव करने पर है। सरकार किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए पशुपालन पर जोर दे रही है। पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई योजनाएं शुरू की हुई हैं और इसके लिए किसानों को आसान किश्तों पर लोन मुहैया कराया जा रहा है। खास बात ये है कि लोन पर अच्छी खासी सब्सिडी भी दी जा रही है। नेशनल लाइव स्टॉक मिशन में बहुत सारी योजनाएं हैं, जिसमें अलग-अलग योजना के लिए अलग-अलग सब्सिडी दी जाती है।

''भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के वचनों के अनुसार गरीबो की गाय कहे जाने वाली प्रजाति बकरी''

केंद्र सरकार का फोकस किसानों की आय बढ़ाने और उनकी लाइफ स्टाइल इम्प्रूव करने पर है। सरकार किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए पशुपालन पर जोर दे रही है। पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई योजनाएं शुरू की हुई हैं और इसके लिए किसानों को आसान किश्तों पर लोन मुहैया कराया जा रहा है। खास बात ये है कि लोन पर अच्छी खासी सब्सिडी भी दी जा रही है। नेशनल लाइव स्टॉक मिशन में बहुत सारी योजनाएं हैं, जिसमें अलग-अलग योजना के लिए अलग-अलग सब्सिडी दी जाती है।

यहां हम भेड़ या बकरी पालन के बारे में बात कर रहे हैं। देश के पशुपालन में भेड़ और बकरी पालन अहम स्थान रखता है। इसकी वजह यह है कि भेड़ या बकरी पालन को कम जगह और कम लागत में शुरू किया जा सकता है। सबसे अच्छी बात

यह है कि बकरी या भेड़ पालन से लागत के मुकाबले आमदनी ज्यादा होती है।

सरकार भी किसानों की इनकम और गांवों में रोजगार को बढ़ाने के लिए बकरी या भेड़ पालन को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी दे रही है।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन

केंद्र सरकार ने बकरी पालन और भेड़ पालन को बढ़ावा देने के लिए 'राष्ट्रीय पशुधन मिशन' (National Livestock Mission) शुरू किया गया है। नेशनल लाइव स्टॉक मिशन के तहत देश में पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए किसानों को सब्सिडी दी जाती है।

नेशनल लाइव स्टॉक मिशन में बहुत सारी योजनाएं हैं, जिसमें अलग-अलग योजना के लिए अलग-अलग सब्सिडी दी जाती है।

नेशनल लाइव स्टॉक मिशन के तहत अलग-अलग राज्य सरकारों की सब्सिडी की मात्रा भी अलग-अलग होती है क्योंकि, यह केंद्र की योजना है लेकिन कई राज्य सरकारें इसमें अपनी तरफ से सब्सिडी में कुछ अंश को जोड़ देती हैं जिससे सब्सिडी की अमाउंट बढ़ जाती है।

क्या योजना है

उत्तर प्रदेश में नेशनल लाइवस्टॉक मिशन (National Livestock Mission) के अंतर्गत रूलर बैकयार्ड बकरी या भेड़ पालन योजना चल रही है। इस योजना में 10 बकरी और 1 बकरा या फिर 10 भेड़ और 01 भेड़ा मुहैया कराया जाता है।

कितनी होगी लागत

भेड़ या बकरी पालन के लिए इच्छुक किसान को लागत का केवल 10 परेसंट ही देना होता है। राज्य के पशुपालन विभाग के मुताबिक, इस योजना की कुल लागत तकरीबन 66,000 रुपये है। इसमें किसानों को अपनी तरफ से केवल 6,600 रुपये ही

देने होंगे। बची हुई अमाउंट को किसान के खाते में ट्रांसफर कर दिया जाएगा।

कैसे करें अप्लाई

जो किसान भेड़ या बकरी पालन करना चाहता है वह इसके लिए एक एप्लीकेशन लिखकर विकास खंड के पशु चिकित्सा अधिकारी के पास जमा कर सकता है। पशु चिकित्सा अधिकारी अपने यहां आईं एप्लीकेशन में से कुछ एप्लीकेशन चुनता है। अब इन एप्लीकेशंस को जिला स्तरीय जिला पशुधन मिशन समिति के पास भेजा जाता है। आखिरी चयन यही समिति करती है।

कृत्रिम गर्भाधान से सुधरेगी-बकरियों की नस्ल

-डॉ. संदीप इंदुरकर

छतीसगढ़ शासन एवं पशुधन विकास विभाग अभिनव पहल से छतीसगढ़ के छोटे पशुपालक किसान की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है, जिसकी शुरुआत राजनंदगांव जिले के दूरस्थ तहसील गंडई के वनांचल ग्रामों में प्रारंभ की गई है। छतीसगढ़ में 20 वीं पशु संगणना के आधार पर मादा बकरियों की संख्या 2751324 एवं नर बकरों की संख्या 1254333 है।

छतीसगढ़ में निम्न वर्ग के छोटे पशुपालक किसान बकरी पालन कर अपना जीवनयापन भी कर रहे है, जिससे उनके जीने का आर्थिक आधार सिर्फ और सिर्फ बकरी पालन है।

उद्देश्य

- छतीसगढ़ के बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान से नस्ल सुधार करना।
- नर बकरों के रख-रखाव एवं पालन के दर को कम करना।
- बीमारियों के संक्रमण को रोकना।
- आनुवांशिक आधार पर उन्नत नस्ल के बकरे या बकरी उत्पन्न करना, जिससे नर बकरों के विक्रय एवं मांस पर अधिकतम मूल्य प्राप्त करना।
- उन्नत नस्ल के मादा बकरियों से अधिकतम दुग्ध उत्पादन करना।

बकरियों में गर्मी के लक्षण

अधिकतम बकरियां ठंड के मौसम में (अगस्त से जनवरी) गर्मी के लक्षण प्रदर्शित करती है एवं प्रकाश भी इनके गर्मी के लक्षण को प्रभावित करता है, जिसमें प्रकाश का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बकरियों में गर्मी के लक्षण 21 दिनों का होता है। यह बकरियों के प्रजाति के आधार पर पाया जाता है एवं बकरियों में गर्मी के लक्षण 24 से 36 घंटे तक रहता है, जिसमें इनके अंडाणु का स्त्राव गर्मी के अंत में होता है। अधिकतम बकरियां 6 से 8 माह के उम्र में प्रथम बार गर्मी के लक्षण प्रदर्शित करती हैं।

- बकरियां अधिकतम गर्मी के दौरान पर अग्रेशिव हो जाती है साथ ही आवाज करती है एवं अधिकतम क्रियाशील हो जाती हैं।
- बकरियां गर्मी के दौरान एक जगह प्रजनन के लिए खड़ी हो जाती हैं।
- बकरियां गर्मी के दौरान दूध कम देती है साथ खाना कम कर देती हैं।
- बकरियों के योनि द्वार से चिपचिपा द्रव स्त्रवित होता है।
- बार बार पेशाब करना।

Table 1- Breeding Time Chart*

If doe's normal heat period length is:	Breed her at this time after first observed signs of heat:
24 hr	As soon as the doe shows estrus
36 hr	Within 12 hr of estrus
48 hr	24 hr after estrus
72 hr	48 hr after estrus

* In all cases, if doe is still in heat 24 hrs after first breeding. breed her again.

कृत्रिम गर्भाधान के पूर्व आवश्यक सामग्रियां

- तरल नत्रजन पात्र
- वेजायनल स्पेकुलम (25 x175 mm)
- प्रकाश हेड लाइट
- वेजायनल स्पेकुलम फिसलन द्रव (स्टेराईल) जो शुक्राणुओं का नुकसान न करे
- स्ट्रॉ कटर
- कृत्रिम गर्भाधान गन
- थर्मामीटर इत्यादि

बकरियों का कृत्रिम गर्भाधान

जैसा की पूर्व में बताया गया है कि अधिकतम बकरियां ठंड के मौसम में (अगस्त से जनवरी) गर्मी के लक्षण प्रदर्शित करती हैं। इसमें गर्मी के लक्षण 21 दिनों का होता है एवं 24 से 36 घंटे तक रहता है। इसमें इनके अंडाणु का स्त्राव गर्मी के अंत में होता है।

- बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान हर 12 घंटे के अन्तराल में 2 से 3 बार करना चाहिये।
- सर्वप्रथम बकरी को अच्छी तरह से काबू में कर सुरक्षित कर लेना चाहिए। बकरी का पिछला हिस्सा ऊपर की ओर उठा हुआ होना चाहिए।
- वेजायनल स्पेकुलम को अच्छी तरह से साफ कर लेना चाहिए एवं फिसलन द्रव से लेप करना चाहिए, ताकि स्पेकुलम आसानी से योनि द्वार में चला जाय।
- वीर्य का संचय दो तरीकों से किया जा सकता है। पहला नर बकरे से तुरंत एकत्रित किये। वीर्य के द्वारा या फिर तरल नत्रजन में एकत्रित वीर्य स्ट्रा के माध्यम से किया जाता है।
- कृत्रिम गर्भाधान के पूर्व योनि द्वार को अच्छी तरह से साफ कर लेना चाहिए, ताकि कृत्रिम गर्भाधान करते समय किसी भी प्रकार से गन्दगी भीतर न जा सके।
- वीर्य स्ट्रॉ का सामान्य तापमान में लाने के लिए थाईग (95°F) पर 30 सेकंड के लिए किया जाता है, फिर कृत्रिम गर्भाधान के लिए वीर्य स्ट्रॉ को कृत्रिम गर्भाधान गन में तैयार किया जाता है।
- वेजायनल स्पेकुलम के माध्यम से आसानी से ग्रीवा को देखा जा सकता है।

बकरियों का गर्भकाल

1) अधिकतम बकरियों का गर्भकाल 145 से 155 दिनों का होता है या 150 दिन (5 माह) का होता है।

2) बकरियां अधिकतम 2 या 3 बच्चों को जन्म देती है।

वर्तमान गतिविधि

वर्तमान में गंडई से दूर वनांचल ग्राम-सेतवा में 3 बकरियों में सफलतापूर्वक कृत्रिम गर्भाधान किया गया

डोंगर यादव भागवत यादव	20/01/2020	काली बकरी
भोले ध्रुव	29/02/2020	लाल बकरी
भोले ध्रुव	29/02/2020	काली बकरी

□□

एम.वी.एस.सी., पशुचिकित्सा सहा. शल्यज्ञ,
पशुचिकित्सालय, गंडई

पशुचिकित्सक से जुड़े सवाल

आप पूछे विशेषज्ञ बताएं

इस स्तंभ के अंतर्गत आपके सवाल होंगे तो हमारे विशेषज्ञ के जवाब, हमें पत्र लिखें। आपसे अनुरोध है कि पत्र टाइप किया हुआ अथवा साफ-साफ लिखा हो। पहले अपना नाम लिखिए, पता लिखिए और फिर लिखिए सवाल, साथ ही आप अपनी फोटो भी भेज सकते हैं। हमारे इस बार के विशेषज्ञ हैं डॉ. पी. के. श्रीवास्तव, वरिष्ठ पशुचिकित्सक

डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
वरिष्ठ पशुचिकित्सक

प्र. मेरी गाय की प्रसूति 3 दिन पहले हुई है। लोग कह रहे हैं कि उसे दाना व हरा चारा न खिलाया जाए। साथ ही उसके थन खाली करने से मना कर रहे हैं, क्या करें

नरेश, बुलंदशहर

उत्तर : अभी आप अपने पशु को दलिया खिलाएं। इसमें तीन हिस्से अनाज, एक हिस्सा खल व एक हिस्सा चोकर मिलाएं। आजकल ठंड ज्यादा है तो आप इसमें गुड़ भी मिला सकते हैं। यह दलिया आप प्रसूति के 21 दिन बाद तक खिलाएं।

ध्यान रखें कि पशु को हरा चारा व सूखा चारा दोनों साथ मिलाकर खिलाएं। पेट के कीड़ों की दवाई जरूर दें। आयुमिन वी-5 खनिज मिश्रण 50 ग्राम आहार के साथ देते रहे, तो अच्छा रहेगा। पशु के थनों से पूरा दूध निकालें अर्थात दूहते समय इसके थन खाली कर दें। अगर थनों में दूध रह जाएगा, तो आपके पशु को थनैला रोग हो सकता है।

प्र. मेरी साढ़े तीन साल की बछिया है, जिसका तीन बार कृत्रिम गर्भाधान व तीन बार प्राकृतिक गर्भाधान हो चुका है, लेकिन वह गर्भ धारण नहीं कर रही है, क्या करें?

जयपाल, जोनपुर

उत्तरः आप अपने पशु की जांच पशु चिकित्सक से अतिशीघ्र करवाएं। आपका पशु हर महीने गरमाने के लक्षण देता है, परंतु गर्भ नहीं धारण कर रहा है। यह मुख्यतः निम्न कारणों से हो सकता हैः-

- पशु की बच्चेदानी में संक्रमण
- पशु के जननांगों की कमजोरी
- पशु की प्रजनन नली में वशांनुगत जन्म से होने वाला विकार।

अब ध्यान देने की बात यह है कि अगर आपके पशु की बच्चेदानी में संक्रमण है, तो वह मामूली है, क्योंकि अगर वह ज्यादा होता, तो आपका पशु गरमाने के लक्षण नहीं दिखाता। ऐसी स्थिति में जब भी आपका पशु गरमाने के लक्षण दे, तो आप उसके बच्चेदानी की दवाई से तीन दिन सफाई करवाएं। अगर उसके जननांगों में कमजोरी है, तो आप पेट के कीड़ों की दवाई दें।

अपने पशुचिकित्सक की सलाह से पशु को जनोवा एवं मिनट्रस दें। सर्वोत्तम खनिज मिश्रण आयुमिन वी-5 प्रतिदिन 30 ग्राम खिलाएं, तो अच्छा रहेगा।

उच्च गुणवत्तायुक्त पशु आहार एक किलो सुबह व एक किलो शाम को खिलाएं।

अगर पशु की प्रजनन नली में वंशानुगत जन्म से होने वाला विकार है, तो आपका पशु हर 20-21 दिन बाद गरमाने के लक्षण देगा और परीक्षण करने पर उसका नाडू भी ठीक होगा, परंतु वह कभी गर्भ नहीं धारण करेगा। इस स्थिति में आप अपने पशु को चिकित्सा अधिकारी को दिखाकर अपने पशु का दूध कृत्रिम ढंग से उतरवा सकते हैं।

इसलिए आप अपनी बछिया का इलाज अतिशीघ्र अपने निकटतम पशु चिकित्सक से करवाएं, ताकि उसका ठीक तरह से इलाज हो सके।

□□

इनसे सीखिए मछली पालन का तरीका, पालते हैं देसी किस्म की मछलियां

अमेरिका में ग्यारह साल नौकरी कर के वापस अपने गाँव में पांच एकड़ जमीन पर नौ तालाब बना कर आधुनिक विधि से मछली पालन शुरू किया है। आज सालाना लाखों का टर्न ओवर करते हैं। यही नहीं वो इसके साथ ही जल संरक्षण को भी बढ़ावा दे रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के सीतापुर जनपद से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित मिश्रिख ब्लॉक के सिद्दीकपुर गाँव के चीनू खान लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद वर्ष 1991 में अमेरिका चले गए।

इसके बाद 2007 में अमेरिका से नौकरी छोड़ने के बाद अपने वतन वापस आकर के चीनू खान मूंगफली, गेहूं, धान, मसूर आदि की खेती बाड़ी करते थे।

चीनू खान बताते हैं, ''गेहूं, धान, मूंगफली की खेती में जब फायदा नहीं हुआ, तो साल 2016 में मछली पालन शुरू किया, जिसमें काफी फायदा हुआ।''

आज चीनू खान के पास 9 तालाबों में देशी प्रजाति के करीब साढ़े बारह लाख मछलियों के बच्चे हैं।

ऐसे करेंगे मछली पालन, तो होगा ज्यादा मुनाफा

चीनू खान बताते हैं, ''किसान भाइयों को देशी मछलियां रोहू, कतला, मृगल प्रजाति को पालना चाहिए, जो महज तीन से चार सौ रुपये किलो के हिसाब से बीज मिलता है। ये प्रजाति की मछलियां बहुत तेजी से बढ़ती है। इनका भोजन कोई विशेष नहीं होता है, बहुत आसानी से पाली जा सकती है।

मछली पालन के लिए ऐसे तैयार करें तालाब की तैयारी

पशुओं के शेड का तापमान कम रखने के लिए इनकी संरचना में सुधार किया जाता है।

तालाब खुदाई करते समय इन बातों का रखें ध्यान

तालाब ज्यादा लम्बाई और चौड़ाई का अनुपात 1:2-3 होना चाहिए। तालाब की लंबाई पूरब से पश्चिम दिशा में होनी चाहिए, जिसके कारण हवा का बहाव होने से आक्सीजन की मात्रा अधिक रहती है। तालाब की गहराई उतनी होनी चाहिए, जहां सूर्य की रोशनी पहुंच सके। जहां पानी का साधन हो वहां तालाब की गहराई से 4-6 फीट रखी जा सकती है।

□□

लॉकडाउन में मछली पालकों को हुआ फायदा, किसान से जानिए कैसे हुई कमाई

पिछले कुछ साल में पंगेसियस मछली का बाजार से तेजी बढ़ा है। इसकी खास बात होती है कि इसमें कांटे नहीं होते हैं और जल्दी तैयार भी हो जाती हैं। सात-आठ महीने में पंगेसियस मछली तैयार हो जाती है, इसलिए साल में दो बार इसे पाल सकते हैं।

लॉकडाउन और कोरोना की अफवाहों के चलते पोल्ट्री फार्म जैसे व्यवसाय से जुड़े लोगों को काफी नुकसान उठाना पड़ा, उस समय मछली पालकों को काफी फायदा हुआ, उन्हें मछली का अच्छा दाम भी मिलता रहा।

बिहार के कैमूर जिले के रामगढ़ ब्लॉक के कलानी गाँव में रहने वाले राजेश सिंह ने तीन साल पहले छोटे से तालाब में मछली पालन की शुरूआत की थी, मछली पालन में फायदा देखकर उन्होंने एक एकड़ में ही मछली पालन शुरू कर दिया था।

राजेश सिंह कहते हैं, ''हर साल की अपेक्षा इस बार लॉकडाउन में मुझे मछली का दाम बढ़िया मिला है। हां, बस उत्पादन कम हुआ था। नहीं तो और अच्छी कमाई हुई होती। खेती से ज्यादा मछली पालन से कमाई हो जाती है।''

लॉकडाउन में जब हर कोई अपने बिजनेस में नुकसान से परेशान हैं, लेकिन राजेश को फायदा हुआ। वो आगे कहते हैं, ''मैंने तालाब में पंगेसियस मछली डाली है, जो इस लॉकडाउन में 115 से 120 के प्रति किलो के दाम से बिकी है। जबकि हर साल 90 से ज्यादा इसका दाम नहीं मिलता है। मछली का व्यापार घाटे का सौदा नहीं है। बस थोड़ा ध्यान दिया जाए, तो आमदनी अच्छी मिल सकती है।''

पिछले कुछ साल में पंगेसियस मछली का बाजार से तेजी से बढ़ा है। इसकी खास बात होती है कि इसमें कांटे नहीं होते हैं और जल्दी तैयार भी हो जाती हैं। सात-आठ महीने में पंगेसियस मछली तैयार हो जाती है, इसलिए साल में दो बार इसे पाल सकते हैं।

राजेश आगे बताते हैं कि मछली पालन में जो लागत आती है, उससे 20 से 30 प्रतिशत अधिक की कमाई कर लेते हैं। यानि साल में 2 लाख से ज्यादा की कमाई कर लेते हैं।

चार बीघा मछली पालन में कुल खर्च आठ लाख रुपए के आस पास लागत आता है। उसके बाद इनकी 9.50 लाख की कमाई हो जाती है। वे मानते हैं की इस बार मछली ठंड में मर गई थी। नहीं तो वह और ज्यादा की कमाई कर सकते थे। उनको यह विश्वास हैं कि अगली बार इस कम आय को ज्यादा कर लिया जाएगा।

राजेश सिंह मछली पालन के अपने व्यवसाय से बहुत खुश है और लोगों को भी सलाह दे रहे हैं कि मछली पालन घाटे का सौदा नहीं हैं। बस इस क्षेत्र में इनको सरकार से थोड़ी उम्मीदें जरूर है।

अगर आप भी पंगेसियस मछली पालना चाहते हैं तो कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। तालाब की गहराई डेढ़ से दो मीटर से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। क्योंकि अगर तालाब ज्यादा गहरा हुआ तो मछलियां बार-बार ऊपर आएंगी, जिससे ज्यादा ऊर्जा खर्च होगी, इनकी वृद्धि कम होगी।

□□

लॉकडाउन से बर्बाद हुए पोल्ट्री किसान अब मुर्गियों के दाने के लिए भी लेना पड़ रहा है कर्ज

कोरोना वायरस और लॉकडाउन की वजह से सिर्फ ब्रॉयलर पोल्ट्री को ही नहीं नुकसान हुआ, लेयर पोल्ट्री को भी काफी नुकसान उठाना पड़ा। स्थिति ऐसी हो गई है कि मुर्गियों को खिलाने के लिए कर्ज तक लेना पड़ा रहा है।

उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले के तेरा गाँव में दस हजार लेयर मुर्गियों का फार्म चलाने वाले बलराम सिंह अनाज बेचकर और कर्ज लेकर मुर्गियों को किसी तरह से पाल रहे हैं।

सोशल मीडिया पर फैली कोरोना की अफवाह और लॉकडाउन से उनको अंडों का व्यापार घाटे का सौदा साबित हुआ। वो कहते हैं, ''लोगों ने अंडा ही खाना बंद कर दिया, उस वजह से रेट डाउन हुए हैं। तब से न तो हम बैंक की किश्त जमा कर पाएं और ना ही कोई फायदा हुआ है। आज की तारीख से पर बर्ड एक रुपए का घाटा ही हो रहा है। दाने का खर्च हर दिन बढ़ रहा है।''

बलराम सिंह लेयर पोल्ट्री फार्म किसी तरह चला रहे हैं, वो कहते हैं, ''मुर्गियों को तो खाने को दाना चाहिए नहीं तो वो भूख से मर जाएंगी, उन्हें जिंदा रखना जरूरी था। खेती का अनाज बेचकर कर्ज पर और उधार लेकर उनके खाने की व्यवस्था की। अंडे के उत्पाद का खर्चा साढ़े तीन रुपए आता है। इन महीनों में अंडा 1.70 रुपए से लेकर 2.50 रुपए तक बिका। मार्च अप्रैल के महीने में प्रतिदिन दस हजार का नुकसान हुआ।''

बलराम सिंह ने लॉकडाउन की वजह से मजदूरों को रोजगार से नहीं हटाया दस वर्कर काम कर रहे हैं। बलराम सिंह आगे बताते हैं, ''6 हजार अंडे का उत्पादन रोज कर रहे हैं, उसमें 25 से अधिक ठेला वाले इस रोजगार से जुड़े थे। बीमारी आने से उन सबका जीवन प्रभावित हुआ है और वो आज आर्थिक स्थिति से बहुत ज्यादा परेशान हैं।''

लॉकडाउन से बिक्री बंद हो गयी, माल नहीं बिक पाया, बहुत सारे अंडे खराब होने का जिक्र करते हुए बलराम सिंह कहते हैं, ''करीब सत्तर हजार अंडे यहां से 120 किलोमीटर दूर झाँसी कोल्ड स्टोर में रखने पड़े, जिसमें आने जाने का भाड़ा और कोल्ड स्टोर का भाड़ा अलग से देना पड़ रहा है। तब जाकर कुछ अंडे बचा पाये।''

बलराम सिंह आगे बताते हैं, ''भारत सरकार के पशुपालन मंत्री श्री गिरिराज सिंह ने स्टेटमेंट दिया था कि अंडे की वजह से कुछ नहीं हैं, सब लोग खाये किसी प्रकार का भ्रम ना फैलाएं, लेकिन अफवाह की वजह से लोगों ने अंडा खाना बंद कर दिया। हम जैसे लेयर पोल्ट्री फार्म वाले ज्यादा नुकसान (लॉस) में चले गए।''

अंडे की बिक्री शाम सात से 9-10 बजे तक होती हैं, जो ठेले वाले हैं वो शाम को लगाते हैं। खाने वाले भी शाम को खाते हैं, लॉकडाउन की वजह से प्रशासन द्वारा सुविधा नहीं हैं कि वो शाम को अंडे का ठेला लगा सकें। बलराम सिंह कहते हैं, ''सत्तर लाख के इस प्रोजेक्ट में सत्तर हजार प्रतिमाह बैंक को किश्त देनी पड़ती हैं, जब बिक्री नहीं होगी, तो हम किश्त कहां से बैंक में जमा कर दें।

मुर्गियों को खाना कैसे खिलाये, पहले उनको जीवित रखना जरूरी हैं फिर बैक देखेंगे।''

तीन महीने से ईएमआई लॉकडाउन की वजह से नहीं भर पाये उनके आगे बढ़ाने की बात करते हुऐ बलराम सिंह बताते हैं, ''किश्त तो देना-देना है, सरकार ने भले ही 20 लाख करोड़ के पैकेज की घोषणा की हैं। हम लोगों की तीन माह की किश्त आगे ना बढ़ाये, बल्कि छूट दे और निश्चित नीति बनाए कि अंडा इससे कम में ना बिके।''

□□

डेरी और पोल्ट्री से कमाई करनी है तो इन 3 बातों का ध्यान रखें...

पशुपालन वैज्ञानिक विधि से करें, पशुओं का आहार अच्छा हो, पशु स्वस्थ हो और तीसरा पशुओं एवं पशुशाला की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें।

आमदनी आज के दौर में किसानों और पशुपालकों के लिए सबसे बड़ा मुद्दा है। हम खुद आमदनी के बढ़ाने के लिए क्या करते हैं, पूछने पर अधिकांश किसान और पशुपालक रटारटाया जवाब देते हैं, ''हमें यही पता था, हमने वही किया।'' लेकिन कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था पर नजर रखने वाले लोग कहते हैं हमें बदलाव की जरुरत है।''

कहा जाता है जब खेती से अपेक्षित मुनाफा न मिले, तो पशुपालन से पैसा कमाना चाहिए। उसके लिए जरुरी है हम जो गाय-भैंस या बकरी पाल रहे हैं, उन पर पूरा फोकस करें। पशुओं की अच्छी देखभाल करें और उन्हें अच्छा चारा-पानी दें।

हरियाणा के सुल्तान भैंसे के बारे में देश में अक्सर चर्चा होती है, चर्चा उसकी करोड़ों रुपए की कीमत और हर साल होने वाली लाखों रुपए कीमत को लेकर होती है। लेकिन अगर इस भैंसे के मालिक कैथल जिले के बूढाखेडा गांव के नरेश बेनिवाल से पूछिए वो अपने बच्चों की तरह इसकी सेवा करते हैं।

कहा जाता है जब खेती से अपेक्षित मुनाफा न मिले, तो पशुपालन से पैसा कमाना चाहिए। रयाणा के सुल्तान भैंसे के बारे में देश अक्सर चर्चा होती है, चर्चा उसकी करोड़ों रुपए की कीमत और हर साल होने वाली लाखों रुपए कीमत को लेकर

होती है। लेकिन अगर इस भैंसे के मालिक कैथल जिले के बूढाखेडा गांव के नरेश बेनिवाल से पूछिए वो अपने बच्चों की तरह इसकी सेवा करते हैं।

नरेश बेनिवाल बताते हैं, ''सुल्तान की रोजाना की खुराक पर करीब 2500 रुपए रोज खर्च होते हैं। सुबह शाम टहलाता हूं और साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखता हूं।'' कहने का स्पष्ट मतलब यह है कि पशुओं से अगर कमाना चाहते हैं, तो उनकी सेहत का पूरा ख्याल रखें, जो पशु चारे-पानी, दवा और रखरखाव का ध्यान रखते हैं वो दूध, मांस और अंडे हर तरह से कमाई करते हैं।

इसके लिए जरूरी है कि किसानों को जागरुक किया जाए। पशुपालकों को जानना जरूरी है कि पशुओं में दो तरह की समस्याएं प्रमुख हैं। एक वो बीमारियां जो विषाणुओं से होती हैं जैसे खुरपका-मुंहपका आदि, जबकि दूसरी वो समस्याएं होती हैं जो पशु को सही ध्यान न रखने पर होती हैं। इसलिए पशुपालकों को पशुओं का ऐसा रखरखाव रखना है कि वह बीमार न हो। इसलिए जरुरी है वैज्ञानिक विधि से पशुपालन करें, पशुओं का आहार अच्छा हो, पशु स्वस्थ हो और तीसरा पशुओं एवं पशुशाला की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें।

दुनियाभर में सेफ फूड को लेकर जागरुकता तेजी से बढ़ी है। लोग स्वस्थ भोजन चाहते हैं, चाहे वो दूध मांस हो या अंडा। विदेशों में ये जागरुकता काफी है, अब भारत में भी लोग सचेत हो रहे हैं।

पशुओं का सेहतमंद और अच्छा खाना-पानी हमारे लिए इसलिए जरुरी है, क्योंकि वो सीधे हमारी सेहत पर असर डालता है। सेंटर फॉर डिजीज डायनैमिक्स, इकनॉमिक्स एंड पॉलिसी के वाशिंगटन डीसी और नई दिल्ली के डायरेक्टर, रामानन लक्ष्मीनारायण की अगुवाई में किए गए एक अध्ययन में बताया गया है कि भारतीय पोल्ट्री फार्म में एंटीबायोटिक्स को चूजों को बढ़ाने और बीमारी से दूर रखने के लिए नियमित तौर पर दिया जा रहा है। पोल्ट्री फार्मों में प्रयोग होने वाली एंटीबायोटिक दवाओं के इस्तेमाल में भारत मौजूदा समय में चौथे स्थान पर है। अगर पोल्ट्री उद्योग में ऐसे ही अंधाधुंध एंटीबायोटिक दवाओं का इस्तेमाल होता रहा तो वर्ष 2030 तक भारत एंटीबायोटिक्स के इस्तेमाल में पहले पायदान पर होंगे। □□

थनैला की समस्या है बहुत भारी, रोकथाम में ही है समझदारी।
समय से जांच और उपचार, करें हम इस पर विचार।।

AYURVET

मैस्टीलेप के फायदे

- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं एवं थनैला से बचाएं
- स्वच्छ दूध उत्पादन में सहायक
- थन की सूजन एवं दर्द कम कर पशु को आराम दिलाएं

मैस्टीलेप
50 ग्राम, 125 ग्राम ट्यूब
तथा 125 मि.ली. स्प्रे
में भी उपलब्ध है।

मैस्टीलेप

थनैला रोग की रोकथाम के लिये हर्बल जैल

विश्व युवा दिवस-युवा पीढ़ी संभल कर विवेकानंद हो जाए

युगपुरुष, वेदांत दर्शन के पुरोधा, मातृभूमि के उपासक, विरले कर्मयोगी, दरिद्रनारायण मानव सेवक, तूफानी हिन्दू साधु, करोड़ों युवाओं के प्रेरणास्रोत व प्रेरणापुंज स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता (आधुनिक नाम कोलकाता) में पिता विश्वनाथ दत्त और माता भुवनेश्वरी देवी के घर हुआ था।

दरअसल, यह वो समय था, जब यूरोपीय देशों में भारतीयों और हिन्दू धर्म के लोगों को हीनभावना से देखा जा रहा था। समस्त समाज उस समय दिशाहीन हो चुका था। भारतीयों पर अंग्रेजीयत हावी हो रही थी तभी स्वामी विवेकानंद ने जन्म लेकर न केवल हिन्दू धर्म को अपना गौरव लौटाया, अपितु विश्व फलक पर भारतीय संस्कृति व सभ्यता का परचम भी लहराया। समय की करवट के साथ नरेन्द्र, स्वामी रामकृष्ण परमहंस से जा मिले और सवाल किया-'क्या आपने भगवान को देखा है? क्या आप मुझे भगवान के दर्शन करवा सकते हैं?' तब उन्हें उत्तर मिलता है-'हां! जरूर क्यूं नहीं।' रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्र को मां काली के दर्शन करवाए और नरेन्द्र ने मां काली से 3 वरदान मांगे- ज्ञान, भक्ति और वैराग्य।

स्वामी विवेकानंद देश के कोने-कोने में गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस के आशीर्वाद से धर्म, वेदांत और संस्कृति का प्रचार-प्रसार करने के लिए निकल पड़ते हैं। इसी श्रृंखला में स्वामी विवेकानंद का राजस्थान भी आना होता है। यही खेतड़ी के महाराजा अजीतसिंह ने उन्हें 'विवेकानंद' नाम दिया और सिर पर स्वामिभान की केसरिया पगड़ी पहनाकर अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म परिषद में हिन्दू धर्म व भारतीय संस्कृति का शंखनाद करने के लिए भेजा।

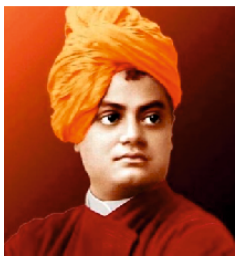

स्वामी विवेकानंद को विश्व धर्म परिषद में पर्याप्त समय नहीं दिया गया। किसी प्रोफेसर की पहचान से अल्प समय के लिए स्वामी विवेकानंद को शून्य पर बोलने के लिए कहा गया। अपने भाषण के प्रारंभ में जब स्वामी विवेकानंद ने 'अमेरिकी भाइयों और बहनों' कहा तो सभा के लोगों के बीच करबद्ध ध्वनि से पूरा सदन गूंज उठा। उनका भाषण सुनकर विद्वान चकित हो गए। यहां तक कि वहां के मीडिया ने उन्हें 'साइक्लॉनिक हिन्दू' का नाम दिया।

4 जुलाई 1902 को स्वामी विवेकानंद पंचतत्व में विलीन हो गए, पर अपने पीछे वे असंख्यक युवाओं के सीने में आग जला गए, जो इंकलाब एवं कर्मण्यता को निरंतर प्रोत्साहित करती रहेगी। आज भारत की युवा ऊर्जा अंगड़ाई ले रही है और भारत विश्व में सर्वाधिक युवा जनसंख्या वाला देश माना जा रहा है। इसी युवा शक्ति में भारत की ऊर्जा अंतरनिहित है। इसीलिए पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने 'इंडिया 2020' नाम की अपनी कृति में भारत के एक महान राष्ट्र बनने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रेखांकित की है। □□

स्वतंत्रता दिवस-15 अगस्त

सदियों की गुलामी के पश्चात 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ। पहले हम अंग्रेजों के गुलाम थे। उनके बढ़ते हुए अत्याचारों से सारे भारतवासी त्रस्त हो गए और तब विद्रोह की ज्वाला भड़की और देश के अनेक वीरों ने प्राणों की बाजी लगाई, गोलियां खाईं और अंततः आजादी पाकर ही चैन लिया। इस दिन हमारा देश आजाद हुआ, इसलिए इसे स्वतंत्रता दिवस कहते हैं। यह दिन 1947 से आज तक हम बड़े उत्साह और प्रसन्नता के साथ मनाते चले आ रहे हैं। इस दिन सभी विद्यालयों, सरकारी कार्यालयों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है, राष्ट्रगीत गाया जाता है और इन सभी महापुरुषों, शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है, जिन्होंने स्वतंत्रता हेतु प्रयत्न किए। मिठाइयां बांटी जाती हैं। दिल्ली में प्रधानमंत्री लालकिले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। वहां यह त्योहार बड़ी धूमधाम और भव्यता के साथ मनाया जाता है। सभी शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है। प्रधानमंत्री राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं। अनेक सभाओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

इस दिन का ऐतिहासिक महत्व है। इस दिन की याद आते ही उन शहीदों के प्रति श्रद्धा से मस्तक अपने आप ही झुक जाता है, जिन्होंने स्वतंत्रता के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी। इसलिए हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम हमारे स्वतंत्रता की रक्षा करें। देश का नाम विश्व में रोशन हो, ऐसा कार्य करें। देश की प्रगति के साधक बनें न कि बाधक। □□

AYURVET
जब भी पशु करे
खाने में आनाकानी
महीने में दें
सात दिन
दूध पायें
रात दिन
रुचामैक्स
दूर करे परेशानी
RUCHAMAX
APPETITE STIMULANT & DIGESTIVE TONIC
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
AYURVEDIC VETERINARY MEDICINE
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

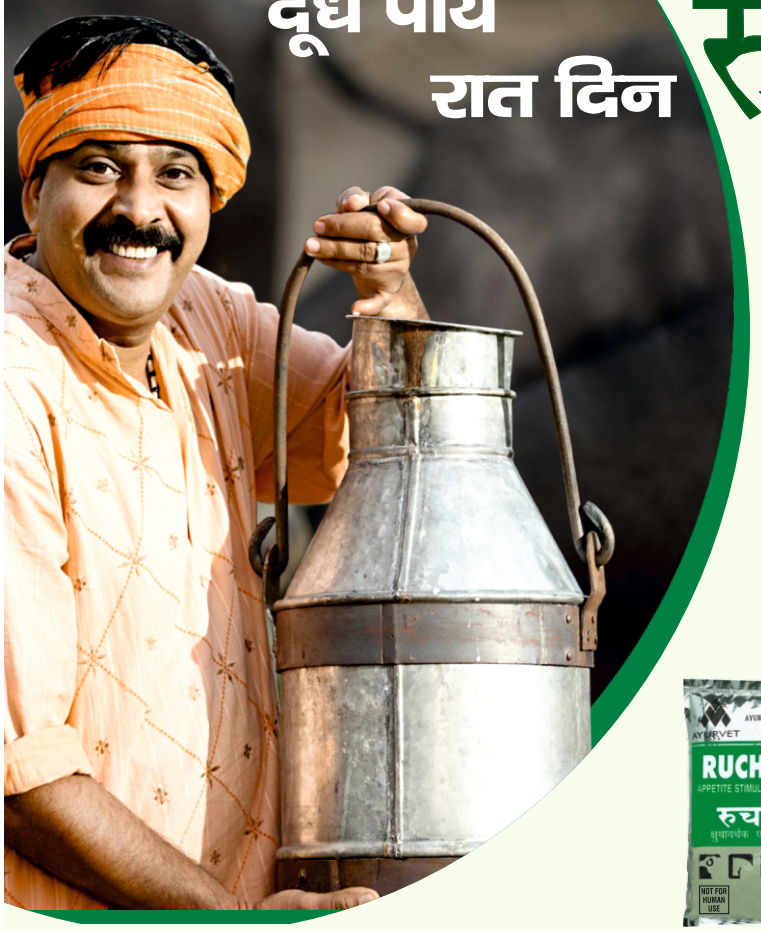

बकरी पालन: छोटे किसानों के लिए स्वावलम्बन का एक जरिया

-डॉ. अशोक कुमार पाटिल एवं डॉ. आर के जैन

गरीब की गाय के नाम से मशहूर बकरी हमेशा ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है। प्रकृति ने छोटे किसानों को वरदान के रुप में बकरियां दी हैं। बकरी पालन मुख्यतः दूध एवं माँस के लिए किया जाता है। भूमिहीन, लघु एवं सीमान्त किसानों के लिए बकरी पालन एक अच्छा एवं लाभकारी रोजगार है। ये निम्नतम खाद्य ग्रहण करके मनुष्य को उच्च स्तर का आहार देती है। उच्च रोग प्रतिरोधी क्षमता और अधिक उत्पादन के कारण ये निर्धनों हेतु सर्वश्रेष्ठ पालतू पशु मानी जाती है।

कोरोना वायरस नामक महामारी ने सम्पूर्ण विश्व को एक आर्थिक संकट की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। हम सतत् समाचारों के माध्यम से देख रहे है। भारत में लाखों की संख्या में मजदूरों का पलायन एक जगह से दूसरी जगह हो रहा है। इससे आप सीधे समझ सकते है कि उनके रोजगार सतत् जा रहे हैं। भारत में ही देखें तो लाखों लोगों के सामने रोजगार की एक बड़ी समस्या खड़ी होने वाली है, और इस स्थिति से निपटने के लिए जो जहां है उसे वहीं पर स्वावलंबन प्रदान करने में पशुपालन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अगर हम देखें तो खेती में पशुपालन एक महत्वपूर्ण अवयव के रूप में हमेशा से उपयोगी रहा है। महामारी एवं सूखे के क्षेत्र में इसका महत्व और बढ़ जाता है और उसमें भी बकरी पालन सूखे की दृष्टिकोण व छोटे किसानों के लिहाज से काफी प्रभावी है। क्योंकि इसमें लागत कम होने के साथ ही साथ आजीविका के विकल्प भी बढ़ जाते हैं।

भारत में खेती और पशुपालन दोनों एक दूसरे के पर्याय माने जाते हैं, और हमारी आजीविका इन्हीं दो के इर्द गिर्द अधिकांशतः घूमती रहती है। खेती कम होने की दशा में लोगों की आजीविका का मुख्य साधन पशुपालन हो जाता है। सरकार के सामने अब एक बहुत बड़ी चुनौती होगी कि इन प्रवासी मजदूरों को उनके क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराना और इस स्थिति में देखे तो बकरी पालन स्वावलंबन का एक सस्ता एवं अच्छा रास्ता हो सकता है बशर्ते उनको इसके फायदों से अवगत कराना होगा। गरीब की गाय के नाम से मशहूर बकरी हमेशा ही

आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है। प्रकृति ने छोटे किसानों को वरदान के रुप में बकरियां दी हैं। बकरी पालन मुख्यतः दूध एवं माँस के लिए किया जाता है। भूमिहीन, लघु एवं सीमान्त किसानों के लिए बकरी पालन एक अच्छा एवं लाभकारी रोजगार है। ये निम्नतम खाद्य ग्रहण करके मनुष्य को उच्च स्तर का आहार देती है। उच्च रोग प्रतिरोधी क्षमता और अधिक उत्पादन के कारण ये निर्धनों हेतु सर्वश्रेष्ठ पालतू पशु मानी जाती है। अकाल जैसी भीषण परिस्थिति में जब किसी अन्य तरह का पशुपालन दूभर हो जाता है, तो बकरी पालन द्वारा निर्धन वर्ग के लोग अच्छी आय प्राप्त कर सकता है। बकरियों का दूध, बच्चों एवं रोगियों के लिए बहुत उपयोगी होता है, क्योंकि प्रतिरोधी क्षमता अधिक होने के साथ-साथ

इसका पालन भी आसानी से हो जाता है। अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से छोटे तथा भूमिरहित किसानों के लिये बकरियाँ रीढ़ की हड्डी साबित होती हैं। बकरी जुगाली करने वाला पशु है। यह पूरा खाना एक बार में न खाकर थोड़ा-थोड़ा खाना पसंद करती है। सामान्यतया बकरियों में सारे आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति अच्छे चरागाहों में चरने से हो जाती है। अगर इनके चरने के लिए आसपास जगह उपलब्ध हो, तो ये शरीर की आवश्यकतानुसार पोषक तत्व ग्रहण कर लेती है। पर्याप्त मात्रा में अगर चरागाह उपलब्ध नहीं हो तो बकरियों को बांधकर भी पाला जा सकता है।

बकरी पालन को स्वावलंबन का जरिया बनाते समय हमें कुछ महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिये, अन्यथा पशुपालक को भारी नुकसान भी हो सकता है और हम समय के उस दौर में खड़े हैं, जिसमें नुकसान में जाना या रिस्क लेना हमारे लिए एवं परिवार के लिए बिलकुल भी उचित नहीं है। इसलिए पशुपालक भाइयों बकरी पालन से अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए निम्न बातों पर जरूर ध्यान देवे :

बकरियो की उत्तम नस्ल का चुनाव

बकरी पालन प्रारंभ करने से पहले उनकी नस्लों के बारे में अच्छे से जानकारी हासिल कर लेना चाहिये, ताकि हमारी उपयोगिता के हिसाब से हम नस्ल का चयन कर सके। वैसे तो बकरियों की बहुत सारी नस्लें होती हैं, परंतु हमारे यहां मुख्य रूप से अगर जमुनापरी, सिरोही, बीटल, ब्लेक बंगाल एवं बरबरी को पाले तो अच्छा लाभ होगा।

आहार व्यवस्था

नस्ल चयन के साथ ही साथ हमें इनके वैज्ञानिक तरीके से रख रखाव और खान पान की जानकारी होना भी बहुत जरूरी है। सब बकरियाँ कई प्रकार के खाद्य सामग्री जैसे- झाडियों के पत्ते, जंगली घास, वृक्षों की पत्तियाँ, खरपतवार एवं अन्य प्राकृतिक पोधों का सेवन भली-भांति करती है। इन चरागाहों मे चराने समय यह बात ध्यान देनी चाहिये कि बकरियाँ ठंड और बरसात के प्रति काफी संवेदनशील होती है, अतः अधिक ठंड में धूप के समय चरने के लिए भेजना चाहिए और बरसात में गीली जगह या दलदल में चराई नहीं कराना चाहिए। अगर चराने के लिए जगह पर्याप्त है, तो दाना देने की भी उतनी जरूरत नहीं पड़ती, परंतु अगर ज्यादा वजन एवं उत्पादन लेना है, तो हमें कुछ दानों का मिश्रण देना होगा। सामान्यतः देखा गया है कि गांवो में लोग बकरी पालन को मुख्य व्यवसाय के रूप में नहीं करते इसलिए वो इसके पोषण पर ज्यादा ध्यान नहीं देते है और जो इससे मिल जाता है, उसी में संतुष्ट हो जाते है, परंतु किसान भाई लगभग 80 से 90 प्रतिशत तो मेहनत बकरियों के रख रखाव पर कर ही रहे हैं, बस थोड़ा सा अतिरिक्त और ध्यान दे लेवे, तो इनको अच्छा लाभ मिल सकता है, जैसेकि गाँव में आहार के साथ खनिज मिश्रण नहीं मिलाते है, जोकि आहार का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अवयव है। ऐसा पाया गया है कि खनिज मिश्रण देने से लगभग 20 से 25 प्रतिशत दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी होती है। साथ ही मेमनों की वृद्धि भी तेजी से होती है एवं जनन संबंधी परेशानियों में भी कमी आती है। जब इतने सारे लाभ एक मिश्रण खिलाने से हो सकते हैं, तो क्यों न इस चीज को महत्त्व दिया जावे, इसलिए सभी पशुपालक भाइयों को इसका ज्ञान होना बहुत जरूरी है।

शुष्क बकरियो का आहार प्रबंधन

ऐसी बकरियाँ, जिनसे दूध उत्पादन नहीं हो रहा एवं ब्याने में लगभग दो महीने से ज्यादा समय बाकी है, को सामान्य प्रकार के आहार की आवश्यकता होती है, जिससे ये अपने शरीर भार को बनाए रखे। इस प्रकार की बकरियों को प्रतिदिन लगभग 500 ग्राम दलहनी या एक कि.ग्रा. अदलहनी हरा चारा, 500 से 600 ग्रा. दलहनी भूसा तथा लगभग 100 ग्रा. दाना मिश्रण की आवश्यकता होगी। जन्म से लेकर तो वयस्क अवस्था तक का आहार प्रबंधन (लगभग) सारणी में नीचे दिया

गया है ।

उम्र	दूध (शरीर भार का)	दाना	सूखा चारा	हरा चारा
0-1 सप्ताह	10 प्रतिशत	-	-	-
1-2 सप्ताह	15 प्रतिशत	-	-	-
2-4 सप्ताह	12 प्रतिशत	शरीर भार का 3 प्रति.	इच्छानुसार	इच्छानुसार
4-8 सप्ताह	7 प्रतिशत	शरीर भार का 2.5 प्रति.	इच्छानुसार	इच्छानुसार
8-12 सप्ताह	3 प्रतिशत	शरीर भार का 2 प्रति.	इच्छानुसार	इच्छानुसार
3-6 माह	-	200-300 ग्रा.	इच्छानुसार	इच्छानुसार
वयस्क	-	400 ग्राम	इच्छानुसार	इच्छानुसार
गाभिन	-	400 ग्राम	इच्छानुसार	1-2 किग्रा
दूध हेतु	-	400 ग्राम	1-2 किग्रा	1-2 किग्रा
प्रजनन हेतु	-	400 ग्राम	1-2 किग्रा	1-2 किग्रा

प्रजनन हेतु बकरों की आहार व्यवस्था

प्रजजन में काम आने वाले बकरे को अच्छा एवं संतुलित आहार की जरूरत होती है। प्रजनन ऋतु से करीब 15 दिन पूर्व एवं बाद लगभग 300 से 500 ग्राम रातिब प्रतिदिन देना लाभप्रद है, विशेषकर जब एक ही बकरा कई बकरियों में प्रजनन हेतु प्रयुक्त किया जाता है। बकरा जब उपयोग में नहीं लाने का समय हो तो आहार की मात्रा कम कर सकते हैं।

गाभिन बकरी की आहार व्यवस्था

गर्भावस्था में उचित आहार प्रबन्ध का प्रभाव बच्चों के जन्म के वजन, उत्तरजीविता, वृद्धि क्षमता तथा कुल दुग्ध उत्पादन पर पड़ता है। बकरी का गर्भकाल 5 माह का होता है। ब्याने की तिथि से लगभग 60 दिन के बाद बकरी को दोबारा प्राकृतिक या कृत्रिम गर्भाधान द्वारा गाभिन करा दें। गाभिन

कराने के तुरन्त बाद 15 से 20 दिन तक 200 से 300 ग्राम दाना मिश्रण तथा 300 से 400 ग्राम हरा-चारा भूसे में मिलाकर प्रतिदिन देवे। गर्भावस्था के अंतिम 6 से 8 सप्ताह में पोषक तत्वों की आवश्यकता बढ़ जाती है। इस समय गर्भ में शिशु की वृद्धि तीव्र गति से होती है, इसलिये इस समय अतिरिक्त पोषक तत्व, ऊर्जा, प्रोटीन और विटामिन शिशु की सामान्य वृद्धि और माँ के उचित शरीर भार बनाये रखने के लिये आवश्यक होता है। गर्भवती बकरियो को अच्छे चरागाह, पेड़-पौधों की पत्तियों और घासों पर रखना चाहियें, जिससे उनके पोषक तत्वो की अवश्यकता को पूरा किया जा सकता है।

दुधारू बकरी का आहार

जैसा कि हम जानते है कि दूध एक संतुलित आहार का काम करता है अर्थात् इसमें सारे तरह के पोषक तत्व होते हैं, जिसकी हमारे शरीर को आवश्यकता होती है। इसलिए दुधारू बकरी की पोषक तत्वों की आवश्यकता सामान्य बकरियों से ज्यादा होती है। इसलिए दुधारू बकरी को सामान्य बकरी से ज्यादा पौष्टिक और संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। सामान्यतः प्रति एक किलो दूध उत्पादन पर उन्हे 0.3 से 0.5 किलो दाना मिश्रण देना पर्याप्त होता है। दाना मिश्रण की मात्रा को दिन में दो बराबर भागों में बाँट कर दें। दूध देने वाली बकरियों को दलहनी हरा चारा कम से कम एक किलोग्राम प्रतिदिन प्रति बकरी जरूर दें। यदि यह उपलब्ध नहीं है, तो उस स्थिति में दलहनी चारो से बनी हे खिलाकर बकरियों की पोषक तत्वों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है।

बीमारियों के प्रति आवश्यक बातें

गांवों में एक चीज और देखी गयी है कि बकरी पालक बंधु बकरियों को टीका लगवाने में मुंह मोड़ते हैं और जब सरकारी

डॉक्टर ओर उनका स्टाफ जाता है या कैम्प लगाते हैं तो अपने पशुओं को लेकर आने में भी पूरा सहयोग नहीं करते है। टीकाकरण को लेकर कुछ भ्रांतियां फैली हुई हैं, परंतु हम आपको बता देवे की टीकाकरण आपकी बकरी को बीमारियों से बचाने का एक सस्ता और आसान तरीका है। वेक्सीन की महत्ता आप इससे ही समझ सकते है कि सारा विश्व आज कोरोना महामारी के लिए टीका बनाने में लगा है, ताकि हम इस बीमारी से भविष्य में बचे रहे। इसलिए सभी बकरी पालक भाइयों को अपने क्षेत्र के डॉक्टर से मिलकर मुख्यतः बकरी प्लेग, एंटेरोटोक्सेमिया, गोट पॉक्स, ऐन्थ्रेक्स ओर खुरपका मुहपका बीमारी का टीका अपनी बकरियो को जरूर लगवाना चाहिए।

दुर्भाग्य से बकरियां अक्सर विभिन्न कीड़ों और परजीवियों से ग्रस्त रहती हैं। और हमारे पशुपालक भाईयों को इन कीड़ों के बारे मे जानकारी न होने के कारण काफी हानि उठानी पड़ती है। इसलिए अपनी बकरियों के शरीर से समय-समय पर कीड़े निकालने के लिए डॉक्टर से परामर्श लेवे ओर उचित दवाई देकर इस हानि से बचने का प्रयास करे।

एक बात और हमारे ध्यान में आती है कि पशुपालक भाई अपने घर के सामने खुली जगह में ही बकरियों को बांध देते हैं, जिससे उन पर वातावरण के बदलाव का सीधा सीधा प्रभाव पड़ता है और इस बदलाव को सहन करने में उनकी अधिकतम ऊर्जा खर्च हो जाती है। अगर पक्का घर नहीं बना सकते, तो इनके लिए एक कच्चा घर, तिरपाल या फालतू बोरों को सीलकर कुछ ऐसी व्यवस्था की जाए, जिससे वे सीधे तौर पर वातावरण के संपर्क में न आवे।

जैसाकि समाचारों के माध्यम से विदित हो रहा है कि कोरोना के साथ जंग लंबी चलेगी और रोजगार के बहुत सारे संसाधन इस महामारी से बंद भी हो जाएंगे। ऐसी स्थिति में इतने सारे लोगों को रोजगार उपलब्ध कराना सरकार के सामने एक बड़ी चुनौती रहेगी। उत्पादन के हर साधन का पूरा-पूरा इस्तेमाल किए बिना देश को खुशहाल नहीं बनाया जा सकता है। लगातार बढ़ते बकरी मांस और दूध की मांग को ध्यान में रखकर हम कह सकते है की बकरी-पालन व्यवसाय का भविष्य उज्ज्वल होगा। यह लोगों को रोजगार देने में तथा माननीय प्रधानमंत्रीजी के आत्म-निर्भर भारत अभियान में भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। बस, जरूरत इस बात की है कि बकरी-पालन का धंधा वैज्ञानिक एवं आधुनिक ढंग से किया जाए, ताकि इस व्यवसाय से अधिक से अधिक आमदनी हासिल कर सके। □□

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविधालय, महू (म प्र.)

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के सजिल्द अंक उपलब्ध

हमारे बहुत से पाठक आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के अंकों को संजोकर रखते हैं, लेकिन कई बार उनसे वह अंक छूट जाते हैं। इसके अलावा, बहुत से ऐसे लोग हैं, जो आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के वर्ष 2017 के 12 अंक प्राप्त करना चाहते हैं। उनके लिए खुशखबरी यह है कि इस वर्ष यानि वर्ष 2017 के सभी अंक बाइंड कर सजिल्द उपलब्ध करवाएं जा रहे हैं। इसके अलावा, वर्ष 2016 के सजिल्द अंकों की भी कुछ प्रतियां उपलब्ध हैं। चूंकि इसकी प्रतियां सीमित हैं अत: आपसे अनुरोध है कि अपनी प्रति जल्द से जल्द बुक करवाएं। एक सजिल्द प्रति की कीमत 400/- रुपए (डाक खर्च अलग) है। राशि ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली के नाम भिजवाएं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-
दूरभाष: 91-120-7100201

कभी साइकिल से दूध बेचने वाले राजेंद्र, आज साल में करते हैं 15 करोड़ के दूध का व्यापार

कभी अपनी एक भैंस का दूध साइकिल से बेचने वाले राजेंद्र दत्तत्रवे आज महाराष्ट्र ही नहीं कर्नाटक और तेलंगाना जैसे राज्यों में भी दूध सप्लाई करते हैं। आज राजेंद्र का सालाना कारोबार 15-16 करोड़ तक पहुंच गया है।

राजेंद्र महाराष्ट्र के मराठवाड़ा के उस्मानाबाद जिले के उमरगा के रहने वाले हैं, जहां पर किसान पानी की कमी से खेती नहीं कर पाते हैं। वहीं राजेंद्र ने दिखा दिया है कि खेती नहीं, तो पशुपालन से कमाई कर सकते हैं।

राजेंद्र दत्तत्रवे से 15 हजार से ज्यादा पशुपालक जुड़े हुए हैं। राजेंद्र बताते हैं, ''करीब 15 साल पहले मेरे पास एक भैंस थी, जिसका दो-चार लीटर दूध मैं साइकिल से लेकर उमरगा जाता था, जब दूध के व्यापार में मुझे मुनाफा दिखा तो एक-एक करके कई गाय और भैंस खरीद ली, जिससे सौ लीटर तक दूध उत्पादन होने लगा।''

धीरे-धीरे दूध के व्यवसाय में राजेंद्र को फायदा दिखने लगा, दूसरे पशुपालकों को भी जोड़ना शुरू किया। वो बताते हैं, ''अपनी डेरी का दूध बेचने के साथ ही मैं सरकारी डेरी के साथ जुड़ा 2002 से 2005 से सरकारी डेरी को दूध देने के बाद एक प्राइवेट डेरी से जुड़ गया, वहां से जुड़ने के बाद बाहर दूध बेचने का तरीका भी पता चला। कैसे हम दूसरे राज्यों तक अपना दूध पहुंचा सकते हैं।''

उस्मानाबाद महाराष्ट्र का एक ऐसा जिला है जो कर्नाटक

और तेलंगाना जैसे राज्यों से भी जुड़ा हुआ है। इसका फायदा राजेंद्र ने उठाया। वो आगे बताते हैं, ''बाद में थोड़ा-थोड़ा करके दूध उत्पादन बढ़ने लगा, फिर दूसरे पशुपालकों को भी जोड़ा, आज हमारे ज्यादातर गाँवों में कलेक्शन सेंटर बने हुए हैं। जहां पर पशुपालक अपना दूध जमा करते हैं, और वहां से गाड़ियों से दूध हमारे मेन सेंटर पर आता है।''

अभी राजेंद्र के पास एक भी गाय या भैंस नहीं है, उन्होंने अपनी सभी गाय-भैंसों अपने से जुड़े हुए पशुपालकों को दे दिया है। आज उनके साथ पंद्रह हजार किसान जुड़े हुए हैं। वो बताते हैं, ''पंद्रह हजार किसानों के यहां से दूध हमारे यहां आता है, जिसको हम चिलिंग सेंटर पर इकट्ठा करते हैं और उसकी पैकिंग करके बाजार तक पहुंचाते हैं।''

राजेंद्र के सेंटर पर ज्यादातर गाय का ही दूध आता है। वह आगे बताते हैं कि ''हमारे यहां ज्यादातर दूध गायों का ही आता है और उन पशुपालकों के पास भी महाराष्ट्र की देशी नस्ल की ही गाएं हैं, कुछ ऐसे भी पशुपालक हैं, जिनके पास भैंस भी हैं, तो कुछ हिस्सा भैंस का भी है। इसे हम अलग-अलग पैकेट में पैक करते हैं।''

राजेंद्र ने खुद तो काम शुरू ही किया, पशुपालकों के अलावा सैकड़ों लोगों को भी रोजगार दिया है। उनके चिलिंग सेंटर पर 50 से ज्यादा लोग काम करते हैं, जिन्हें रोजगार मिला हुआ है।

आयुर्वेट रिसर्च फाउण्डेशन

नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित अनुसंधान केंद्र में निम्नलिखित जांच सुविधाएं उपलब्ध-

- ✓ खाद्य, पशु आहार और हरा चारा
- ✓ पानी
- ✓ मिट्टी
- ✓ जैविक खाद
- ✓ औषधीय पौधे
- ✓ एंटीबायोटिक्स
- ✓ माइकोटॉक्सिन

हमारे अनुसंधान केंद्र में आपका स्वागत है। हम शैक्षिक दौरों के लिए आवेदन आमंत्रित करते हैं।

हम मनुष्यों और पशुधन के लिए सुरक्षित और गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन में सहयोग करते हैं।

Registered Office : 4th Floor , Sagar Plaza, Distt. Centre, Vikas Marg, Laxmi Nagar, Delhi, INDIA - 110 092.
Phone: 011-22455993 • Email: info@ayurvet.com • Website: www.ayurvet.com

Corporate Office: Unit No. 101-103, 1st Floor, KM Trade Tower, Plot No. H-3, Sector-14, Kaushambi, Ghaziabad -201010 (U.P.)
Tel.: 0120-7100201 • Fax : 0120-7100202

AYURVET RESEARCH FOUNDATION

सफल ब्यांत - अधिक दूध उत्पादन तथा मुनाफे की ओर बढ़ते कदम

बेहतर पशु स्वास्थ्य, अच्छा पाचन और अधिक दुग्ध उत्पादन

स्वस्थ ब्यांत

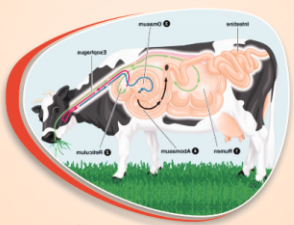

बढ़िया पाचन प्रणाली

स्वस्थ अयन

एक्सापार

जेर गिराने व गर्भाशय की सफाई के लिए

रुचामैक्स

क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये,
तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

AYURVET™ आयुर्वेट लिमिटेड

कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587

रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान